ज्ञानामृत

अक्तूबर, 1985 वर्ष 21 ❋ अंक 4 मूल्य 1.50

1.

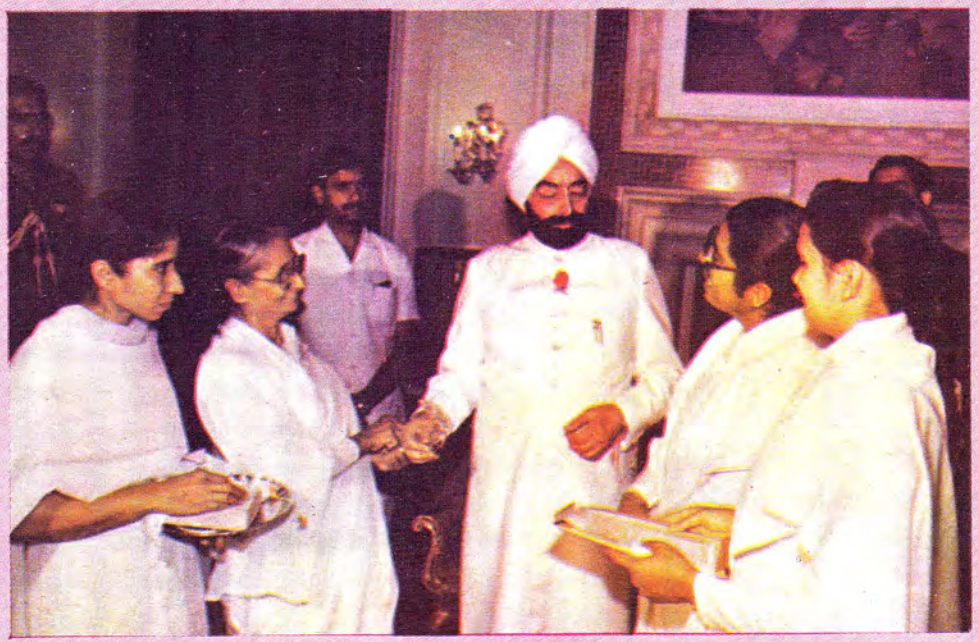

2.

1. नई दिल्ली में ब्र० कु० रूकमणि जी भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी को पवित्रता और स्नेह की सूचक राखी बांधते हुए। ब्र० कु० आशा उन्हें राखी का पवित्र सन्देश सुना रही हैं।
2. भारत के उप राष्ट्रपति भ्राता आर. वेंकटरमन जी को ब्र० कु० पुष्पा राखी बांधते हुए। ब्र० कु० लक्ष्मी तथा ब्र० कु० सन्तोष योग की दृष्टि देते हुए।

आबू पर्वत से देहली 'भारत एकता युवा पदयात्रा' के आबू पर्वत पर उद्घाटन के समय ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि, मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० ई. वि. विद्यालय कलश धारण किए हुए।

विशाखापटनम में ब्र० कु० हेमा भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए।

दिल्ली में ब्र० कु० चक्रधारी देहली के उपराज्यपाल भ्राता एम. एम. वली को स्नेह और पवित्रता की सूचक राखी बाधते हुए।

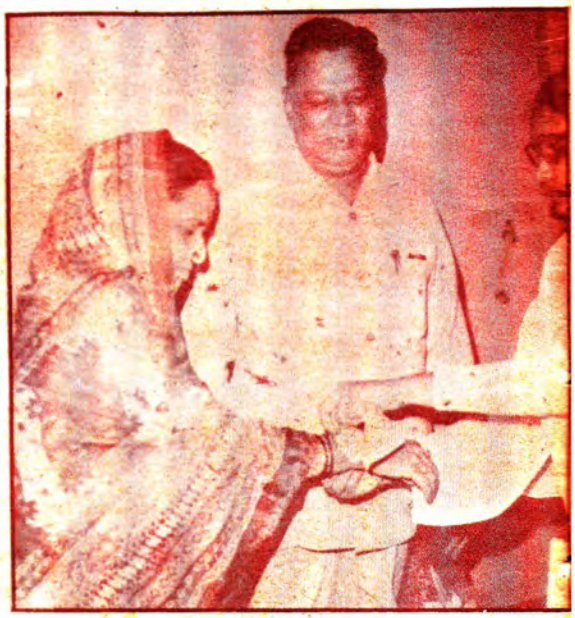

वारंगल में, ब्र० कु० शान्ता ने भ्राता एस. बी. चवान तथा उनकी धर्मपत्नी को पवित्रता सूचक राखी बांधी।

कलकत्ता–देहली 'भारत एकता युवा पदयात्रा' के पटना पहुंचने पर 'युवा जागृति आध्यात्मिक सम्मेलन' का उद्घाटन करती हुई ब्र० कु० दादी निर्मल शान्ता जी तथा बिहार के मुख्य सचिव भ्राता कृष्ण कुमार श्री वास्तव जी

अहमदाबाद में ब्र० कु० सरला गुजरात के उच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधीश को राखी बांधते हुए।

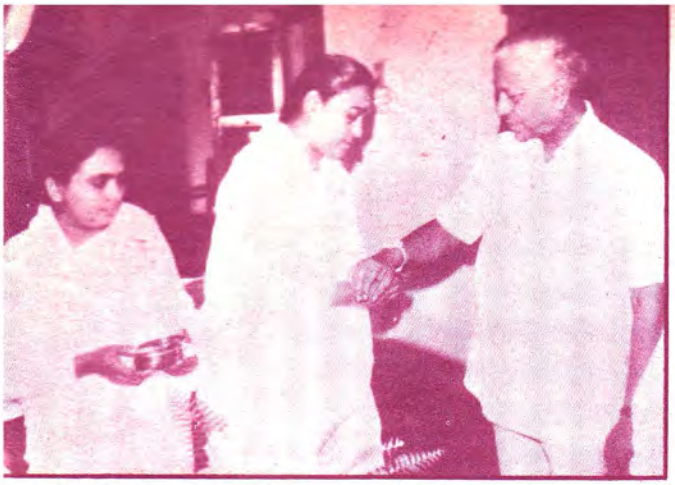

उड़ीसा के उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता डी. डी. पाथक को राखी बांधती हुई ब्र० कु० कमलेश जी।

पटना में बिहार के कृषि एवं श्रम मन्त्री भ्राता चौधरी को ब्र० कु० निर्मल पुष्पा राखी बांधती हुई।

कलकत्ता में ब्र० कु० गीता प. बंगाल के मुख्यमन्त्री भ्राता ज्योति वसु को राखी बांध रहे हैं।

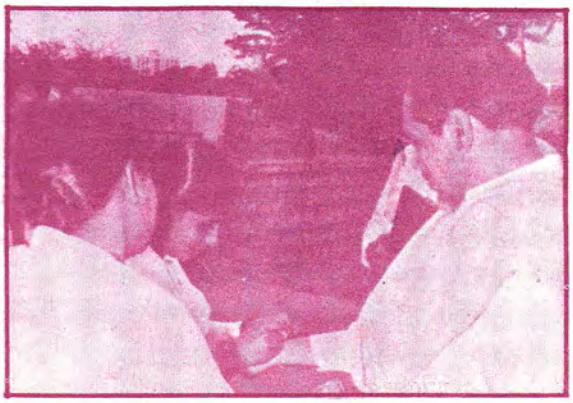

बंगलौर में ब्र० कु० लीला मुख्य मन्त्री भ्राता राम कृष्ण हैगडे जी को राखी बांधते हुए।

बम्बई में ब्र० कु० सरोज महाराष्ट्र के हाऊसिंग मिनिस्टर डॉ० सुब्रामनयम को राखी बांधते हुए।

नई दिल्ली में ब्र० कु० अरूणा तथा कोकिला भारत के पैट्रोलियम मन्त्री भ्राता नवल कुमार शर्मा जी को राखी बांधते हुए।

ब्र० कु० दादी चन्द्रमणि जी, अमृतसर में डी. एस. पी. को प्रसाद देते हुए।

सोमनाथ से दिल्ली 'भारत एकता युवा पदयात्रा' के पदयात्रियों का अहमदाबाद शहर में नगर निगम की ओर से नागरिक अभिनन्दन किया गया। मंच पर (दाएं से) ब्र० कु० हृदय मोहिनी जी, ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी, उप-महापौर भ्राता सिराजुद्दीन काजी, अहमदाबाद नगर निगम के स्वास्थ्य विभाग के अध्यक्ष और स्टैंडिंग कमेटी के अध्यक्ष विराजमान हैं।

भारत के उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता पी. एन. भगवती से ज्ञान चर्चा के पश्चात् ब० कु० हृदयमोहिनी जी उन्हें दिव्य गुणों का गुलदस्ता भेंट करते हुए। ब्र० कु० इन्द्रा, बिमला तथा भ्राता जयप्रकाश जी साथ खड़े हैं।

बंगलौर में ब्र० कु० हृदय पुष्पा जी कर्नाटक के राज्यपाल भ्राता के. बैनर्जी को स्नेह-सूचक राखी बांधते हुए।

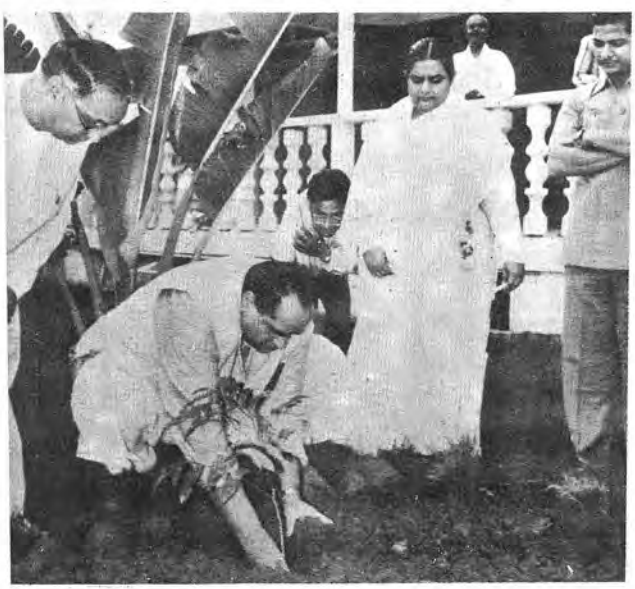

इन्दौर—न्युपलासिया स्थित ओम शान्ति भवन के परिसर में म. प्र. विधान सभा के अध्यक्ष भ्राता राजेन्द्र शुक्ल वृक्षारोपणन करते हुए। समीप खड़े हैं ब्र० कु० ओमप्रकाश जी तथा ब्र० कु० आरती जी।

शिमला में ब्र० कु० अरूणा हिमाचल के मुख्य मन्त्री भ्राता वीरभद्र सिंह जी को राखी बांधने के पश्चात् उनके साथ खड़ी हैं।

Regd No. 10563/65·D(E)·70

अमृत-सूची

१. दिल्ली में विशाल युवाकार्यक्रम १
२. एक आध्यात्मिक शैक्षिणक संस्था २
३. आइये ५
४. सचित्र समाचार ६
५. गणपति-रहस्य ८
६. आ करें स्वागत (कविता) १२
७. रामकथा के कुछ प्रसंग १३
८. दुःखों का अन्त १५
९. बहिरा परिवार १८
१०. अन्तमुर्खता २०
११. विश्व की बागडोर युवा के हाथ में २१
१२. आध्यात्मिक सेवा समाचार (चित्रों में) .. २५
१३. रक्षा-सूत्र २९
१४. गीत ३०
१५. आध्यात्मिक सेवा समाचार ३१

दिल्ली में विशाल युवा कार्यक्रम

24 और 25 अक्तूबर, 1985

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, जिसके भारत तथा अन्य 50 देशों में लगभग 1500 आध्यात्मिक शिक्षा केन्द्र हैं और जो संयुक्त राष्ट्र संघ का गैर-सरकारी संस्था के तौर से एक सदस्य है, ने सन् 1985, जो कि अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष है, में एक विशाल युवा कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा संचालित एक रजिस्टर्ड संस्था—राजयोगा एज्यूकेशन और रिसर्च फाउन्डेशन-के युवा विभाग (Youth Wing) ने, जो कि 'युवा और शान्ति' (Youth for Peace) के नाम से जाना जाता है, यह फैसला किया कि भारत के विभिन्न प्रदेशों के सैंकड़ों-हजारों गांवों में पदयात्राएं निकाली जाएं।

सैंकड़ों गांवों में युवा वर्ग द्वारा पदयात्राएँ

ये पदयात्राएं निम्नलिखित स्थानों से प्रारम्भ हुईं

1. कन्याकुमारी (तामिलनाडु)
2. पुरी (उड़ीसा)
3. डिब्रूगढ़ (आसाम)
4. कलकत्ता (बंगाल)
5. बम्बई (महाराष्ट्र)
6. सोमनाथ (गुजरात)
7. माउण्ट आबू (राजस्थान)

इसके साथ-साथ, लगभग सभी प्रदेशों में, जिनमें देहली भी शामिल है, उपरोक्त यात्राओं की तुलना में कुछ छोटी पदयात्राएं भी निकाली गईं।

पांच अन्य यात्राएँ

धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश), **अमृतसर** (पंजाब), **बद्रीनाथ** (उत्तर प्रदेश), **पोखरा** (भारत-नेपाल सीमा) से पदयात्राएँ और **बेलगाम** (महाराष्ट्र) से एक साईकिल यात्रा प्रारम्भ हुई।

लम्बे-लम्बे मार्ग तय करती हुई और विभिन्न राज्यों से गुजरती हुई ये सभी पदयात्राएं 23 अक्तूबर, 1985 को दिल्ली में प्रवेश करेंगी।

इन पदयात्राओं के लक्ष्य तथा उद्देश्य

इन युवाओं ने लोगों को प्रेरणा देने के लिए गाँव-गाँव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी, राजयोग शिविर, स्लाइड शो तथा आध्यात्मिक प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजित किये। उनके निम्नलिखित उद्देश्य थे:

1. हम सब आपस में भाई-भाई, एक परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं— यह दृष्टिकोण अपनाना

2. तम्बाकू, शराब, अन्य नशीले पदार्थों व मांसाहारी भोजन का सेवन छोड़ना

शेष पृष्ट.....३२ पर

सम्पादकीय

एक आध्यात्मिक शैक्षणिक संस्था

जब हम किसी को बताते हैं कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय एक आध्यात्मिक शिक्षा संस्थान (Spiritual Educational Institution) है तो उससे वे प्रायः यह सोच लेते हैं कि यह एक धार्मिक (Religious) संस्था है। वे धार्मिक (Religious) और आध्यात्मिक (Spiritual) को समानार्थक मान लेते हैं। पुनश्च, कुछेक लोग इसे एक शैक्षणिक संस्था (Educational Institution) मानने को तैयार ही नहीं होते क्योंकि उन्होंने एक दृढ़ धारणा बनाई हुई है कि जिस विद्यालय में भौतिक विज्ञान, मनोविज्ञान, समाज विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल, दर्शन, भाषा, निर्माण कला इत्यादि-इत्यादि विद्याएं पढ़ाई जाती हैं और जिनके यहां विधिवत परीक्षा और विद्यार्थी के विद्यार्जन (Educational attainments) का मूल्यांकन (Assessment) होता है, जहां पाठ्यक्रम (Syllabus) निश्चित है और जहां परीक्षा के पश्चात कोई प्रमाण पत्र अथवा उपाधि आदि भी दी जाती है, केवल उन्हें ही **'शैक्षणिक संस्थाएं'** कहा जा सकता है। हम संक्षेप में यहां विचार करेंगे कि क्या 'शिक्षा संस्था' के बारे में यह दृष्टिकोण उचित है और **'धार्मिक'** तथा **'आध्यात्मिक'** में क्या अन्तर है? यों यह एक विस्तृत चर्चा का विषय है जिस पर कई पहलुओं से प्रकाश डाला जा सकता है और उसमें बुद्धिजीवी लोगों को रस भी आ सकता है। परन्तु इस लघु लेख में उसे अति संक्षिप्त अथवा सूत्र रूप में ही प्रस्तुत किया जा सकना सम्भव है।

शैक्षणिक संस्था अथवा विद्यालय

पहले हम इस बात पर विचार कर लेते हैं कि शिक्षा अथवा विद्या क्या है और 'विद्यालय', 'महाविद्यालय', 'विश्वविद्यालय' या 'शिक्षा-संस्था' किसे कहा जा सकता है? परन्तु इससे भी पहले हम यह कहना चाहते हैं कि शिक्षा संस्था के बारें में, जो कुछ लोगों का दृष्टिकोण ऊपर दिया गया है, उसके अनुसार तो दो चार सौ या पांच-सात सौ वर्ष पहले तक तो किसी भी व्यक्ति को 'शिक्षित' कहा ही नहीं जा सकेगा क्योंकि पहले विद्याध्ययन कोई प्रमाण-पत्र या उपाधियों के लिए तो किया नहीं जाता था न ही केवल प्रमाण-पत्र प्राप्त करने वाले लोगों ही को शिक्षित माना जाता था बल्कि विद्या को तो जीवन के विकास के लिए अर्जित किया जाता था। जब हम प्राचीन सभ्यताओं का अध्ययन करते हैं तो मालूम होता है कि पहले हजारों वर्षों तक आज की तरह तो कोई शिक्षा प्रणाली नहीं होती थी बल्कि शिष्य अपने आचार्य के पास रहकर या उसके घर जाकर एक घरेलु से वातावरण में विद्या प्राप्त करता था। इसे आजकल कई लोग शिक्षा की 'गुरुकुल पद्धति' का भी नाम देते हैं। परन्तु यदि उस समय की उपलब्धियों पर विचार किया जाए तो यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि तब के विद्यार्थी भी शब्द-शास्त्र, भाषा, व्याकरण, दर्शन (Philosophy), समाज शास्त्र (Sociology), राज विद्या (Political Science), संगीत (Music), नृत्य कला, चित्र कला, भवन-निर्माण कला (Architecture), युद्ध कला (Art of War), चिकित्सा (Medicine), वनस्पति विज्ञान (Botany), रसायन कला (Chemistry), खगोल विद्या (Astronomy) इत्यादि में काफी निष्नात थे। यद्यपि उनके पास कोई प्रमाण पत्र या उपाधि नहीं थी और न ही आज की तरह, तब शिक्षालयों में कोई विभाग (Departments or Faculties) या दर्जे थे तथापि ये नहीं कहा जा सकता कि उन दिनों विद्या नहीं दी जाती थी या तब विद्यालय नहीं थे। इसी प्रकार, यह कहना भी गलत होगा कि केवल उन्हीं संस्थाओं को 'शैक्षणिक संस्थाएँ' कहा जा सकता है जो कि विद्यार्थियों की परीक्षा लेती हैं और उनके उत्तीर्ण होने पर उन्हें प्रमाण-पत्र या उपाधि प्रदान करती हैं। हमें यह याद रखना चाहिए कि विद्या अथवा शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान, विज्ञान, तकनीकि से सुसज्जित करना है जिससे कि उसके व्यक्तित्व तथा योग्यताओं का विकास हो और वह एक सुखी जीवन जीता हुआ अपनी योग्यताओं की अभिव्यक्ति कर सके और जीवन को सफल बना सके और ऐसी विद्या के आदान-प्रदान का कार्य तो प्राचीन काल में भी होता ही था। तब मनुष्य न केवल कुछ कलाएँ (Arts), विज्ञान, दर्शन और हुनर सीखता था बल्कि तब उसे ऐसे नैतिक मूल्यों की धारणा भी सिखाई जाती थी जिससे कि उसका जीवन अच्छा बने और वह एक अच्छा नागरिक बने।

जहाँ तक शिक्षा की पद्धति अथवा प्रणाली का प्रश्न है वहाँ तक तो यह बात स्पष्ट है कि आज भी शिक्षा को अनौपचारिक रीति से दिए जाने और अध्यापक तथा विद्यार्थियों में निकट संबध बनाए रखने के महत्त्व को माना जाता है। यद्यपि आज जनसंख्या की तीव्र वृद्धि के कारण; सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक रीति में

परिवर्तन होने के कारण और प्राकृतिक विद्याओं के बढ़ने के कारण गुरूकुल पद्धति, आश्रम प्रणाली या घरेलू रीति को नहीं चलाया जा सकता, तथापि उसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि जिन शिक्षा संस्थाओं में औपचारिकता कम रहती है और जिन में शिक्षक तथा विद्यार्थियों में निकटता का संबध बनाए रखने पर ध्यान दिया जाता है, उन्हें 'शैक्षणिक' ही नहीं कहा जा सकता है। जो लोग अनौपचारिक वातावरण होने के कारण या परीक्षा एवं प्रमाणपत्र न होने के कारण किसी विद्यालय को एक शैक्षणिक संस्था मानने से इन्कार करते हैं, वे गोया शिक्षा के मूल उद्देश्य और उसकी अनौपचारिक पद्धति के बारे में अपनी अनभिज्ञता प्रदर्शित करते हैं।

परीक्षाओं और प्रमाणपत्रों के बारे में यदि हम चर्चा करें तो इस बात को सभी मानते ही हैं कि आज की परीक्षा प्रणाली में बहुत से दोष हैं। आज की स्थिति में यद्यपि परीक्षाएँ जरूरी मानी जाती हैं तो भी उन्हें एक **'आवश्यक बुराई** (necessary evil) ही समझा जाता है क्योंकि परीक्षाओं का बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है और यह भी स्पष्ट है कि जो छात्र अथवा छात्राएँ परीक्षा में रह जाते हैं, जरूरी नहीं कि वे कम बुद्धि वाले, घटिया योग्यताओं वाले या ज्ञान के दृष्टिकोण से दूसरों की तुलना में कम ज्ञानी होते हैं।

इसके अतिरिक्त इसे समझना भी कठिन नहीं होना चाहिए कि मनुष्य के चरित्र अथवा उसकी आध्यात्मिक उपलब्धियों की परीक्षा अन्य विषयों की तरह कोई प्रश्नपत्रों के द्वारा किसी हाल में बैठ कर नहीं ली जा सकती बल्कि स्वभावतः भिन्न प्रकार की उपलब्धियाँ होने के कारण उनकी परीक्षा का अलग तरीका होना भी स्वाभाविक है। मनुष्य की रूहानियत की परीक्षाएँ इस संसार रूपी बड़े हाल में होती हैं और अपनी माध्यात्मिक अवस्था को ऊँचा उठाने के लिए मनुष्य को अपने मन, वचन, कर्म का परीक्षक (examiner) बनना पड़ता है।

पुनश्च, इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि अगर भौतिक वस्तुओं के अतिरिक्त अलग से कोई आध्यात्मिक सत्ता भी है जिसको जानने या न जानने से हमारे व्यवहार, हमारे आंतरिक जीवन और हमारे अनुभव में बहुत अंतर पड़ जाता है तब इस आध्यात्मिक अथवा चेतन सत्ता (आत्मा) के बारे में अध्ययन करना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि इस भौतिक जगत और उसमें की शक्तियों का अध्ययन जरूरी है। अतः ये कहना कि आध्यात्मिक विद्यालय **'शैक्षणिक संस्था'** ही नहीं गोया आत्मा और परमात्मा नामक आध्यात्मिक सत्ताओं के अस्तित्व को नकारना है अथवा इनका अध्ययन किए बिना इस विषय के मूल को न मानना है।

यदि इस सत्यता को तर्क अथवा विवेक संगत रीति से और व्यवहारिक रूप से प्रतिपादित किया जा सके कि आत्मिक विद्या के अध्ययन का संबध हमारी आदतों से, हमारे चरित्र से, हमारे आवेगों (Emotions) की स्थिरता से, हमारे आंतरिक अनुभवों से और हमारी सामाजिक समस्याओं से बहुत गहरा है तब यह कह देना कि कोई भी आध्यात्मिक संस्था शैक्षणिक संस्था नहीं अथवा कि आध्यात्मिक विद्या की कोई आवश्यकता नहीं है ये विवेक को छोड कर न्याय रहित और अनुचित बात कहना है। मनुष्य को चाहिए कि चेतना (Conciousness) अथवा आत्मा अथवा अभौतिक मन से निजी अस्तित्व के बारे में जो प्रमाण हैं पहले वह उनका अध्ययन करे और उसके बाद ही यदि उसके पास इसके अस्तित्व के विरुद्ध कोई ठोस एवं विश्वसनीय प्रमाण हों तब वह उनके अस्तित्व से इन्कार की बात कहे और वह उस स्थिति में यह भी बताए कि कैसे वे तथ्य जो व्यक्ति दे रहा है, आध्यात्मिक तथ्यों की तुलना में हमारी सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं को सुलझाने के लिए तथा हमें उससे अच्छे अनुभव कराने में ज्यादा सहयोगी हैं।

इसके अतिरिक्त, हमें इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिए कि ज्ञान का केवल इतना ही प्रयोजन नहीं है कि हमें विश्व और उसमें मनुष्य के स्थान का एक सुनियोजित और गठित बोध कराए बल्कि यह जरूरी है कि उससे हमें यह भी स्पष्ट हो कि चेतन सत्ता का (अर्थात हमारा) स्वरूप क्या है और हमारे अस्तित्व तथा कार्यकलापों का प्रयोजन क्या है। यदि इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो आध्यात्मिक शिक्षा को शिक्षा ही न मानना अथवा उसको महत्व न देना असम्भव प्रतीत होता है।

फिर हमें यह भी याद रखना चाहिए कि एक ऐसे अध्ययन क्षेत्र की भी आवश्यकता है जो सब प्रकार के विषयों के अध्ययन से प्राप्त हुए ऐसे निष्कर्ष हमें बताए

जो हमारे नित्य प्रति के जीवन को अधिक सुखद बना सकते हैं और समाज में दूसरों के संग ठीक बन कर चलने में हमारे लिए सहायक हो सकते हैं। इस दृष्टिकोण से यह जानने की जरूरत है कि भौतिकी (Physics), रसायन शास्त्र (Chemistry), इतिहास, मनोविज्ञान इत्यादि हमारी उन्नति तथा आंतरिक एवं बाह्य विकास के लिए हमें क्या सुझाते हैं। इस प्रकार का अध्ययन जो कि इतिहास-दर्शन (Philosophy of History), भौतिकी-दर्शन (Philosophy of Physics) इत्यादि अनेक दर्शनों का एक समन्वित दर्शन होगा, जिसे 'जीवन दर्शन (Philosophy of Life) यां 'जीवन-पद्धति दर्शन' (Philosophy of Life-Style) कहना अच्छा होगा, आध्यात्मिक शिक्षा का एक अंग हैं और हमारी आत्माभिव्यक्ति तथा हमारे सद्विकास के लिए आवश्यक है।

अब थोड़ी '**धार्मिक**' और '**आध्यात्मिक**' संस्थाओं के बीच के अन्तर के बारे में भी दो शब्द कहना आवश्यक होगा।

'धार्मिक' और 'आध्यात्मिक' में अंतर

इसमें संदेह नहीं कि धार्मिक अनुभव भी आंतरिक अनुभव तो होता है और कि धर्म का उद्देश्य भी मनुष्य की चेतना का उर्ध्वमुखी विकास है और व्यक्ति में आध्यात्मिक गुणों को बढ़ावा देना है, परन्तु फिर भी 'धार्मिक' और 'आध्यात्मिक' को समानार्थक मानना गलत होगा। यह कहना ठीक है कि जो धार्मिक है वह आध्यात्मिक भी हो सकता है परन्तु जो आध्यात्मिक है वह एक हद तक धार्मिक होता ही है परन्तु वह केवल उतना ही न होकर उससे अधिक भी कुछ होता है। आज की स्थिति में कहा जा सकता है कि जिसे हम 'धर्म' कहते हैं उसमें रस्म-रिवाजों (Rituals) का और पौराणिक कथाओं (Mythology) का भी एक काफी बड़ा स्थान है परन्तु जिसे हम 'आध्यात्मिक' कहते हैं वह अधिकतर अथवा पूर्णतः इन दोनों से मुक्त है और उसका बल पुरानी अविश्वसनीय कथाओं पर न हो कर ऐसे सिद्धांतों और मूल्यों पर है जो कि विवेक संगत हैं और जिन्हें युक्ति द्वारा सिद्ध किया जा सकता है। आज कुछ धर्मों में बहुत से विश्वास और सभी धर्मों में कुछ कुछ विश्वास ऐसे हैं जो कि अन्ध श्रद्धा पर आधारित हैं परन्तु आध्यात्मिक शिक्षा का प्रयास अंधविश्वास, हानिकारक रस्मों, धार्मिक सिद्धांतों में अन्तः विरोध, निरर्थक और फिजूल-खर्ची वाले रीति-रिवाजों, अविश्वसनीय कथाओं, कुछ व्यक्तियों की महानताओं के बारे में अतिशयोक्तियों, दूसरे धर्मों के बारे में घृणा और द्वेष-भावों, गुरु के बारे में अनुचित धारणाओं, मूर्ति-पूजा तथा यात्राओं इत्यादि और आत्मा, परमात्मा तथा सृष्टि के बारे में गलत विचारों का निराकरण कर सत्य का बोध कराना है।

आध्यात्मिक शिक्षा का एक और महत्त्वपूर्ण लक्षण यह है कि वह किसी जाति या सम्प्रदाय से जुड़ी नहीं होती न ही तो किसी ऐसे सिद्धान्त को कट्टरता पूर्वक मानने के लिए बाध्य करती है जो कि अविश्वसनीय है और जिसे सिद्ध न किया जा सके।

इसके विपरीत, आध्यात्मिक शिक्षा—आत्मा, परमात्मा, सृष्टि, कर्म-सिद्धांत तथा नैतिक मूल्यों इत्यादि के बारें में पक्ष तथा द्वेष रहित रीति से और युक्ति तथा विवेक सम्मत् रीति से प्रकाश डालती है। यद्यपि इसका एक उद्देश्य श्रेष्ठ धार्मिक अनुभव (जिसे 'आध्यात्मिक अनुभव' कहना अधिक उपयुक्त होगा) कराना है, तथापि इसकी विधि शैक्षणिक होती है; वह न तो जातीयता से न साम्प्रदायिकता को लिये होती है। निस्संदेह आध्यात्मिक शिक्षा में भी मन का नाता परमपिता परमात्मा शिव से जोड़ने के लिये कहा जाता है परन्तु उसका उद्देश्य लोगों को शैव **सम्प्रदाय** में शामिल करना नहीं होता, न ही उसके पीछे वैष्णव या शाक्त सम्प्रदायों को घटिया बनाने की भावना होती है। दूसरे शब्दों में, इस शिक्षा का अभिप्राय भी किसी वर्तमान सम्प्रदाय की महिमा को बढ़ाना या कोई नया सम्प्रदाय स्थापन करना नहीं होता बल्कि लोगों को सत्य का मार्ग दर्शाना होता है।

आध्यात्मिक शिक्षा और आध्यात्मिक विद्यालय की एक और विशेषता यह है कि वह किसी एक धर्म की नहीं बल्कि सभी धर्मों का इतिहास में जो स्थान है, उस पर प्रकाश डालता है। वह सत्य और हितकर नियमों के **सार्वभौम रूप को समूचे** मानवमात्र के सामने रखते हैं। उसमें एक अशरीरी परमपिता परमात्मा की ही परम महिमा होती है; वे किसी भी मनुष्य को परमात्मा या

परमात्मा के बराबर नहीं मानते। यदि सत्यता आज की वैज्ञानिक, दार्शनिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक मान्यताओं से भिन्न हो तो भी वह सत्यता को सब के सामने रखने के कर्त्तव्य से विमुख नहीं होते। वे हर धर्म और हर शिक्षा-क्षेत्र की गलत एवं अन्धविश्वास पर आधारित मान्यताओं को दूर कर उन्हें पवित्रता और सच्चाई के मार्ग का संकेत देते हैं। इस प्रकार वह नये तथ्य सभी के सामने रखते हैं, नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं और जितने भी ज्ञान-विज्ञान अस्तित्व में हैं, उन सभी पर अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं क्योंकि उनका अभिप्राय तो सत्यता और शुद्ध एवं सम्पूर्ण सत्यता को दर्शाना है।

इस प्रकार उनका अध्ययन क्षेत्र केवल आध्यात्मिक नहीं होता यद्यपि आध्यात्मिक लक्ष्य सदा उनके सामने रहता है। वे ज्ञान के हरेक क्षेत्र का, जहां तक कि उसका आध्यात्मिक ज्ञान से सम्बन्ध है, चर्चा करते हैं। इस प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान एक विस्तृत विषय है और इस से सभी ज्ञानों- विज्ञानों का ताना-बाना आध्यात्म से जुड़ा है और इसके निष्कर्ष सभी ज्ञानों तथा विज्ञानों के लिये रुचिकर तथा महत्त्वपूर्ण हैं।

"आइए !"

ब्र० कु० राज कुमारी, देहली

इस दिव्य निमन्त्रण का—

प्रयोजन है : युवा वर्ग को सच्चरित्र, सद्विवेक एवं सन्मार्ग की झलक दिखाना।

आयोजन है : २४ और २५ अक्टूबर को ताल-कटोरा स्टेडियम में भारत एकता युवा रैली का।

मनोरंजन है : शुद्ध-स्वस्थ-शुभ भावनामय कार्य-क्रमों से।

भोजन है : आत्माओं का ज्ञान-तपस्वी युवाओं के अनुभवों एवं प्रेरणाप्रद प्रसंगों से।

निवेदन है : आप पधार कर शोभा बढ़ाएँ।

अपेक्षा है : आप अवश्य ही आध्यात्मिक लाभ उठाएँगे।

प्रतीक्षा है : आपके रूहानी स्वागत की।

परीक्षा है : आपके ईश्वरीय प्रेम और लगन की।

इच्छा है : आपको ज्ञान-अमत पिलाने की।

सिरोही में युवा समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वहां के कलेक्टर भ्राता अशोक सम्पत जी अपने विचार प्रगट कर रहे हैं। मंच पर दादी जी, मोहनी बहन बैठी हैं।

रक्षा बन्धन के पावन पर्व पर कृष्णा नगर, देहली सेवा केन्द्र पर जमनापार के गांव के प्रधान पधारे। उन्हें पावन राखी बांधी गई। बाएं से ब्र० कु० पुष्पा, कमलमणि, चक्रधारी बहिन तथा लक्ष्मण भाई विराजमान हैं।

दिल्ली शक्तिनगर-ब्र० कु० सुधा बहन निगम आयुक्त भ्राता पी. पी. श्री वास्तवा को राखी बांध रही हैं। साथ में ब्र० कु० रानी बहन तथा दादा किशन चन्द बैठे हैं।

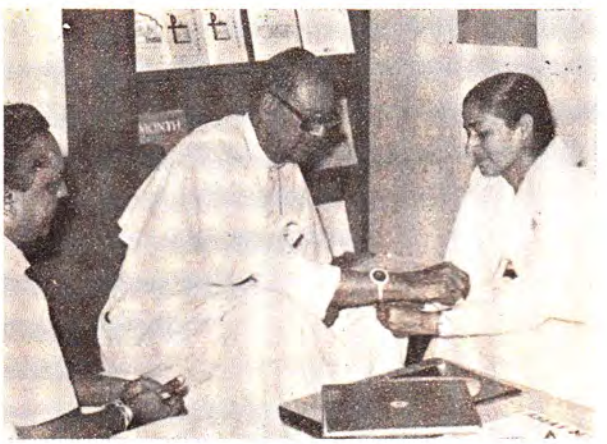

दिल्ली के आर्कबिशप एन्जैलो फरनानडैस को पहाड़गंज की ब्र० कु० शील राखी बांध रही हैं।

कटक में ब्र० कु० रेनू शहरी विकास मंत्री भ्राता डमरूधर जी को राखी बांध रही हैं।

सतना में ब्र० कु० निर्मला जी वहां के विधायक डा० लालता प्रसा खरे जी को राखी बांध रही हैं।

जालंधर में जन्माष्टमी पर ब्र० कु० कृष्णा भ्राता एच. के. त्रिखा जी (I.G.B.S.F.) को श्री कृष्ण का चित्र भेंट कर रही हैं।

ब्र० कु० अरूणा आर्वी अंध विद्यालय में अंधे विद्यार्थियों को राखी बांध रही हैं।

ग्वालियर सेन्ट्रल जेल में कैदी भाइयों का एक दृश्य ज्ञान श्रवण करते हुए।

ग्वालियर सेन्ट्रल जेल में ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र० कु० लाल चन्द्र साथ में ब्र० कु० बहन भाई बैठे हैं।

जूनी इन्दौर मूक बधिर विद्यालय में ब्र० कु० बहनें गूंगे, बहरे तथा अन्धे बच्चों को राखी बांध रही हैं।

भिवानी सेन्ट्रल जेल में राखी बान्धने पश्चात् ब्र० कु० बहन कैदियों को परमात्मा का परिचय दे रही है।

भावनगर जेल में कैदियों को राखी बांधती हुई ब्र० कु० गीता बहन।

कलकत्ता से चलने वाली पदयात्रा जब सरिया पहुंची तो रांची सेवा केन्द्र की ओर से उनका स्वागत तथा विदाई भी हुई।

रायगढ़ से चन्द्रपुर तक पद यात्रा निकाली गई जिसमें रायगढ़ के प्रमुख व्यापारी राम-स्वरुप रतेरिया जी सामने दिखाई दे रहे हैं।

जीन्द सेवा केन्द्र द्वारा टोहाना में विश्व शान्ति सम्मेलन के अवसर पर चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता हनुमान सिंह जी एम. एल. ए. ने किया। साथ में खड़े हैं एस. डी. एम. टोहाना।

देवास में पदयात्रियों का स्वागत भाषण करते हुए संसद सदस्य बापू लाल जी मालवीय। विधायक चन्द्र प्रभात शेखर एवं कलेक्टर पी. ाय उन्मन, ब्र० कु० आरती तथा अन्य मंच पर हैं।

भटिन्डा-मानसा की ओर से मौड़ मंडी में प्रदर्शनी में वहां के गीता भवन के प्रधान ओपीनियन लिखते हुए।

भिवंडी में युवा जागृति प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए वहां के सुप्रसिद्ध व्यापारी (रोटरी क्लब के प्रमुख) भ्राता देवराज जी।

गणपति-रहस्य

(क्रमागत)

गणपति का आसन

आपने इस बात पर ध्यान दिया होगा कि गणपति जब बैठे होते हैं तो उनके दाहिने पाँव का थोड़ा-सा भाग पृथ्वी को स्पर्श कर रहा होता है जबकि बाहिनी टाँग ऊपर उठी होती है। बाँय पाँव दाँयी टाँग से दबा होता है। चित्रकार अथवा मूर्ति निर्माता किन्हीं आध्यात्मिक रहस्यों को व्यक्त करने के लिए ही गणपति जी का ऐसा आसन दिखाते हैं।

शरीर-विज्ञान के अनुसार हमारा दाँया हाथ और दाँयी टाँग हमारे मस्तिष्क के बाँयें भाग से जुड़े होते हैं और हमारी बाँयी टाँग और बाँया हाथ हमारे मस्तिष्क के दाँये अर्द्ध भाग (Right Hemisphere) से जुड़े होते हैं। मस्तिष्क-विज्ञान-वेत्ता (Brain Scientists) कहते हैं कि हमारे मस्तिष्क का बाँया भाग तर्कप्रधान और विश्लेषणात्मक (Analytical) तथा सूक्ष्माणवेषी (Abstract thinking) में कुशल होता है जबकि हमारे मस्तिष्क का दाँया भाग हमारे संवेगों (Emotions) का केन्द्र है। यदि इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो तर्क प्रधान बाँये अर्द्ध भाग से जुड़ी हुई दाँयी टाँग का पृथ्वी को स्पर्श करना संसार तथा इसके तथ्यों (Facts) से सम्पर्क बनाये रखने का (Keeping in touch with the reality of life) प्रतीक है। यह इस बात का सूचक है कि यह व्यक्ति इस बात को मानता है कि संसार बना हुआ है (अर्थात् यह स्वप्न-मात्र नहीं है) और कि हमें यहाँ रहते हुए यहाँ की समस्याओं को हल करना है न कि इनसे आँख मूंद लेनी है।

इसी प्रकार मस्तिष्क के दाँये अर्द्ध भाग से जुड़ी हुई बाँयी टाँग और बाँये पाँव का ऊपर उठे रहना और दाँयी टाँग से दबे रहना इस बात का सूचक है कि हमारे संवेग और आवेग (Emotions) इस पृथ्वी के आकर्षण से ऊपर उठे होने चाहिएं और यह विवेक के अधीन होने चाहिएँ। ज्ञानवान व्यक्ति के ज्ञान की यही सफलता है कि वह साँसारिक मोह-ममता से उपराम रहता है। वह साँसारिक कर्त्तव्यों को भी निभाता है; वह ऐसा नहीं कहता कि "हे रामजी, यह जगत बना ही नहीं है" परन्तु साँसारिक कामनाओं और तृष्णाओं से ऊँचा उठा रहता है।

गणपति जी के सिंहासन से यह दोनों भाव प्रदर्शित होते हैं—एक तो यह कि वे अभी उठे कि उठे अर्थात यह कि एक टाँग तो उन्होंने नीचे कर ही ली है और दूसरी टाँग वे अभी नीचे किया ही चाहते हैं। उनकी इस बैठक से दूसरा भाव यह निकलता है कि उन्होंने एक टाँग तो उठा ही ली है और दूसरी भी वे उठा ही रहे हैं क्योंकि तभी तो उनका पाँव केवल थोड़ा-सा स्पर्श ही कर रहा है। यदि हम इनमें से प्रथम भाव लें तो उससे यह प्रतीत होता है कि वे सदा तैयार (Active and Alert) हैं। गोया वे जब चाहें, कार्य-क्षेत्र में उतर आयें। उनकी इस बैठक से दूसरा यह भाव प्रदर्शित होता है कि उन्होंने मन को संसार से समेट तो पहले ही रखा है, निमित्त मात्र वे कर्म क्षेत्र पर हैं और इस पर भी वे क्षण में ही मन को इससे पूर्णतः हटाकर ऊपर की स्टेज में अविलम्ब रीति से स्थित हो सकते हैं गोया उनकी ऐसी बैठक भी उनकी ज्ञान-निष्ठ स्थिति की परिचायिका है।

वाहन-मूषक

यह कितना विचित्र लगता है कि इतने भारी-भरकम गणपति जी के लिए वाहन है—चूहा! अवश्य ही इसका भी कोई गहन अर्थ होगा।

चूहे की यह विशेषता है कि वह हर चीज़ को, चाहे महँगी हो या सस्ती, कुतर-कुतर करता रहता है। अपने खाने के लालच के कारण दूसरों की हर चीज़ को टक-टूक करके रख देता है। ठीक ऐसे ही

कुछ लोग दूसरों की हर एक बात को चाहे वो कितनी ही समझदारी की मूल्यवान क्यों न हो, कुतर-व्योंद करते हैं। वो तर्क का प्रयोग बात को गहराई से समझने और लाभान्वित होने के उद्देश्य से नहीं करते बल्कि उसका अनुचित प्रयोग करके बात को टूक-टूक करने में लगाते हैं। वे समझते हैं उसे विवेक, परन्तु वह सद्विवेक की बजाय होता है कुविवेक। वो हँस की तरह का नहीं, बल्कि चूहे की तरह का लक्षण है। ज्ञानवान व्यक्ति ऐसी प्रवृत्ति को अपने काबू में रखता है। वो तर्क भले ही करे परन्तु कुतर्क नहीं करता, गोया वो तक को अपने वश में रखकर प्रयोग करता है। इसी अथ में चूहा (मूषक) गणपति जी का वाहन है। गणपति विवेकवान, तर्क सम्पन्न है परन्तु वह तर्क को कुतर-कुतर करने के लिए स्वच्छन्द नहीं छोड़ देते। उनका वाहन चूहा विवेक की अविवेक पर विजय का सूचक है।

चूहा चुपके से ही बिल बनाते-बनाते घर में आ जाता है और छिपके अथवा अन्धेरे में कुतरने का काम करता रहता है। ऐसे ही संशय अथवा अविवेक भी अज्ञान अंधकार में आकर बिल में छिपने की तरह अप्रत्यक्ष रूप में अपना काम करना शुरू कर देता है और मनुष्य के ज्ञान की जड़ें खोखली कर देता है। मनुष्य को चाहिए कि संशय की प्रवृत्ति पर काबू पाये।

बुद्धि और सिद्धि अथवा विधि और सिद्धि

गणेश जी के दोनों ओर बुद्धि और सिद्धि नामक उनकी दो पत्नियाँ दिखाई जाती हैं। ये भी क्रमशः ज्ञान और उस द्वारा होने वाली सफलता की प्रतीक हैं। जो बुद्धिवान होगा अर्थात सोच-समझ कर कार्य करेगा, दूरदर्शिता का प्रयोग करेगा, उसको सिद्धि अथवा सफलता तो होगी ही। सफलता तो ज्ञानवान व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है।

कई बार गणेश जी के चित्रों में उनके साथ केला को भी चित्रित किया जाता है, साथ ही लक्ष्मी को भी। केले के पौधे की यह विशेषता है कि उसके ऊपर के पत्ते को हटाएँ तो उसके नीचे और पत्ता निकल आता है। यदि उसको हटायें तो उसके नीचे एक और पत्ता सामने आ जाता है। अपने इस विशेषता के कारण केला इस बात का सूचक है कि ज्ञानवान व्यक्ति की बातों में गहराई होती है। उसकी बात जो हम ऊपर-ऊपर सुनते हैं, यदि हम उसकी गहराई में जायें तो इसमें एक और बात छिपी होती है। इस बात को देखकर किसी कवि ने कहा है—

जैसे केले के पात-पात में पात।
तैसे ज्ञानी की बात-बात में बात॥

अतः गणपति के साथ केला को चित्रित करने के पीछे ये भाव होता है कि ज्ञानवान व्यक्ति की बातों में बहुत गहराई होती है।

'लक्ष्मी' शब्द 'लक्ष्य' शब्द से बना है। लक्ष्मी को सदा कमल पर बैठे या खड़े हुए दिखाया जाता है। यहाँ तक कि उसके नामों में से एक नाम कमला भी है। लक्ष्मी वैकुण्ठ के राज्य-भाग्य की परिचायिका है। वो पवित्रता, सुख और शान्ति का मूर्त रूप है क्योंकि ज्ञानवान व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य भी सम्पूर्ण पवित्रता व शान्ति के जीवन को प्राप्त करना अथवा कमल पुष्प समान बनना अर्थात स्वग का सुखकारी स्वराज्य प्राप्त करना होता है। इसलिए गणपति के साथ लक्ष्मी को दिखाना स्वाभाविक है।

ये सभी लक्षण किस पर चरितार्थ होते हैं?

हमने पूर्व पृष्ठों में गणपति जी के जिन अलंकारों व प्रतीकों आदि का उल्लेख किया है, उन सबसे यही निष्कर्ष निकलता है कि गणपति जी परमपिता परमात्मा द्वारा प्राप्त ज्ञान को गहराई से समझने वाले, उसे जीवन में पूर्णतः व्यवहार में लाने वाले, स्वयं लक्ष्य स्वरूप और ज्ञान की सिद्धियों को प्राप्त करने वाले ही का प्रतीक है।

परन्तु जब हम यह सुनते और मानते हैं कि गणपति शिव सुत, शिव के बालक अथवा पुत्र ही

का एक गुणवाचक या कर्त्तव्य-वाचक नाम है तो हमें उनके परिचय का और अधिक स्पष्टीकरण मिलता है। गणपति अथवा गणनायक एक प्रकार से प्रजापति अथवा प्रजापिता शब्द का पर्यायवाची है क्योंकि गण और प्रजा लगभग समानार्थक है। इस बात को मन में रखते हुए कहा जा सकता है कि गणपति प्रजापिता ब्रह्मा ही थे। यह उनका कत्तव्य वाचक नाम है क्योंकि प्रजापिता ब्रह्मा ने ही परमपिता परमात्मा शिव से ज्ञान को प्राप्त कर ज्ञानियों में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। ब्रह्माजी की जीवन कहानी को सुनने के बाद इस कथा का भी रहस्य समझ में आ जाता है कि कैसे परमपिता परमात्मा शिव ने उनके पुराने मानवी संस्कारों के स्थान पर अब उन्हें नये संस्कार और विशाल बुद्धि प्रदान की। उन्होंने इस ईश्वरीय बुद्धि के आधार पर नई सष्टि की स्थापना के कार्य में आए विघ्नों को पार किया। इसलिए वे विघ्न विनाशक भी हैं।

प्रजापिता ब्रह्मा के अतिरिक्त अन्य भी जो ईश्वरीय ज्ञान को प्राप्त करते हैं और ज्ञानवान के लक्षणों को धारण करते हैं उस पर भी ये लक्षण चरितार्थ होते हैं, गोया वे भी विघ्न-विनाशक ही बन जाते हैं।

स्वास्तिक गणपति का समानार्थक कैसे है

"स्वास्तिक" शब्द का अर्थ है—'शुभ', 'मंगल-कारी'। इसलिए यह विघ्न-विनाशक गणपति का समानाथक है।

स्वास्तिक वास्तव में सारे ज्ञान का सार चित्रित करता है। इसके बीच की दो रेखाएं जो परस्पर एक-दूसरे को समकोण पर विच्छेद करती हैं, वे किसी एक वृत के दो व्यासों (diameters) के समान हैं जो कि उस वृत को चार ऐसे बराबर भागों में बांटते हैं जो परस्पर विपरीत दिशा में हैं और इसलिए दार्शनिक दृष्टिकोण से विपरीत सामाजिक-राजनोतिक-धार्मिक स्थिति के संकेतक हैं। स्वास्तिक की चार भुजाएं इन्हीं चार विपरीत दिशाओं और दशाओं को इंगित (point out) करती हैं। सबसे ऊपर की दाँयीं ओर की भुजा सतोप्रधानता, पवित्रता, सुख और शान्ति की स्थिति की द्योतक हैं और इसलिए यह सृष्टि-चक्र के सर्वप्रथम युग—सतयुग को चित्रित करती है। इसके बाद दाँयीं ओर नीचे की दिशा चित्रित करने वाली भुजा धीरे-धीरे पवित्रता, सुख, शान्ति की कलाओं के ह्रास को जताती हुई त्रेतायुग की द्योतक है जिसमें भी सात्विकता, पवित्रता, सुख और शान्ति विद्यमान होते हैं यद्यपि कम मात्रा में। तत्पश्चात् बाँयी दिशा में संकेत करती हुई भुजा इस बात को चित्रित करती है कि त्रता के अन्त में देवता वाम मार्ग में चले गए। धर्म की ग्लानि आरम्भ हो गई। जीवन वाम पक्ष की ओर मुड़ गया अर्थात् उसमें अपवित्रता, दुःख और अशान्ति ने प्रवेश किया और समाज को विभाजित करने वाले कारण जैसे कि अनेक धर्म, अनेक भाषाएं, अनेक वाद शुरू हो गए और इनके परिणामस्वरूप लड़ाई-झगड़ा, घृणा, द्वेष—ये भी दिनों-दिन बढ़ते चले गए।

इसके वाद स्वास्तिक की चौथी भुजा, जो बाँयीं ओर ऊपर की दिशा में उठी है, वो बुराई, लड़ाई, पापाचार, अत्याचार, विकार के बढ़ते जाने की द्योतक है। यहाँ तक कि धर्म को अति ग्लानि हो जाती है और कलियुग के अन्त में घोर अज्ञानता, पापाचार और नरसंहार होता है।

धर्म की अति ग्लानि की इस बेला में ही परमात्मा अवतरित होकर ज्ञान और योग की शिक्षा देते हैं। पुनः सतयुग की स्थापना करते हैं, मनुष्य को देवता बनाते हैं और नर को श्रीनारायण पद के अधिकारी बनाते हैं।

इस प्रकार स्वास्तिक विश्व के तीनों कालों के इतिहास का तथा आत्माओं के आवागमन के चक्र का रहस्य खोल कर हमारे सामने रख देता है। इस रहस्य को जान लेने से मनुष्य का कल्याण हो जाता है। अमंगल मंगल में, अशुभ शुभ में और अनिष्ट निर्विघ्नता में परिवर्तित होता है। इसलिए

जैसे गणपति ज्ञान-निष्ठ अवस्था के प्रतीक हैं, वैसे ही यह स्वास्तिक भी ज्ञान को एक रेखाचित्र द्वारा एक दृष्टि में ही समझा देता है और इसलिए इसे भी लोग गणेश ही कहने लगे हैं। जैसे वह हर शुभ कार्य अथवा धार्मिक आयोजन के प्रारम्भ में गणपति का पूजन करने लगे, वैसे ही वे ये रेखाकार चित्र अपने बही के शुरू में, भूमि-पूजन के समय, गृह-प्रवेश के समय तथा हर मांगलिक पर्व के समय करने लगे, इसके साथ-साथ वह कलश और नारियल का भी प्रयोग करने लगे क्योंकि परमपिता ज्योतिस्वरूप परमात्मा की आकृति भी नारियल जैसी है और उस ज्ञान सागर पिता ने सागर को गागर में बन्द करने की उक्ति के अनुसार नर-नारियों को ज्ञान कलश दिया और स्वास्तिक रूपी चक्र की तरह सृष्टि चक्र का ज्ञान दिया।

इन सब रहस्यों को समझते हुए अब हमें यह चाहिए कि स्वास्तिक द्वारा सृष्टि चक्र का जो ज्ञान स्पष्ट होता है और गणपति अथवा प्रजापिता ब्रह्मा जिस कारण से ज्ञानियों में सर्वश्रेष्ठ हुए, उस ज्ञान को अब हम सुनें और धारण करें।

हमारे लिए यह सौभाग्य की बात है कि अब परमपिता परमात्मा शिव ने फिर से वह ज्ञान-कलश प्रदान किया है और फिर से उस लुप्त-प्रायः ज्ञान का रहस्य सुनाया है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय, हरेक इच्छुक नर-नारी को अपनी यह निःशुल्क सेवा अर्पित करता है कि वह इसके किसी भी सेवाकेन्द्र पर प्रातः या सायं पधार कर ज्ञान रूपी अमृत का पान करें तथा जीवन में आनन्द रूपी मार्ग का बोध करें। □

आ करें स्वागत !

ब्र० कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली

'कर' में झण्डा, भृकुटी में "टीका", नैनों में रुहे नशा
लिए होठों पे दिव्य मुस्कान औ वेश में अलौकिकता
कलष लिए सिर पे···पग यात्रा करता—
वो देख ! चला आ रहा है युवा।

पूरब से, पश्चिम से, उत्तर से, दक्षिण से,
इत से, उत से, यत्र से, तत्र से,
रश्मियाँ शान्ति की बिखेरता—
वो देख ! चला आ रहा है युवा।

गाँव-गाँव, डगर-डगर के काँटे बुहारता,
नशीले व्यसनों में फँसे हुओं को उभारता,
प्रतिज्ञाएँ श्रेष्ठ कराता—
वो देख ! चला आ रहा है युवा।

निकाल रावण की सें, राम की में बिठाता,
कछु नहीं कठिन और, सिर्फ गोदी बदली करता,
कुवृत्तियों का परिवर्तन कराता—
वो देख ! चला आ रहा है युवा।

उठ छोड़ झमेले, ओ अलबेले ! आ तू भी—
हंसों की इस पाँति में, शामिल हो ले;
संग न कुछ भी चलेगा, वक्त की दरकार बताता
वो देख ! चला आ रहा है युवा !

ओ भारत के दिल दिल्लीवासी, आ करें स्वागत !
फूल वर्षाएँ, तिलक लगाएँ, अमृत छिड़काएँ,
सिहासन देकर, चरण धुलाएँ, मीठा मुख कराएँ,
सद्भावों की सौगात लिए, उसकी उमंग बढ़ाएँ,
शीघ्र तू आ, नैन धन्य कर जा
दिल्ली का प्राँगण चमकाने, वो देख !
चला आ रहा है युवा !

○

राम कथा के कुछ प्रसंग–आध्यात्मिक दृष्टिकोण से

ब्र० कु० सुधा, शक्तिनगर, दिल्ली

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी दशहरा आ गया। इस वर्ष भी जगह-जगह रावण के बुत बनाये जायेंगे और उन्हें जलाया जाएगा और लाखों लोग उन्हें जलता देखकर हर्षोल्लास मनायेंगे। परन्तु रामकथा के जो अनमोल आध्यात्मिक रहस्य हैं, उनसे कोई विरला, अन्तर्मुखी व्यक्ति ही लाभान्वित होगा।

राम कथा के कई ऐसे प्रसंग हैं जिन्हें अक्षरार्थ में तो समझा ही नहीं जा सकता। अक्षरार्थ में तो वे बहुत अटपटे और असंभव-से मालूम होते हैं परन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से वे बड़े गहन अर्थ को लिये हुए हैं। यदि उन्हें समझ लिया जाए तथा आचरण में लाया जाए तो जीवन की फुलवाड़ी महक उठती है।

उदाहरण के तौर पर राम-रावण के युद्ध के प्रसंग के उस अंश पर विचार कीजिए जिसमें यह वर्णन आता है कि रावण के एक-एक सिर को काटने पर फिर-फिर वे उग आते थे और इस विधि तो रावण का मरना एक असंभव-सा था। यदि इसके अक्षरार्थ पर विचार किया जाए तब पहले तो दस सिरों के अस्तित्व को मानना ही जीव-विज्ञान (Biology) के दृष्टिकोण से अविश्वसनीय प्रतीत होता है और फिर यदि दस सिर मान भी लिये जायें तो सिर कटने के बाद फिर से उग आना तो और भी ज्यादा अप्राकृतिक महसूस होता है। मनुष्य का सिर कोई एक वृक्ष की तरह थोड़े ही है कि जिसकी ऊपर की टहनी काटने पर और जड़ के बचे रहने पर टहनियाँ फिर से उग आती हैं। यदि ऐसे ही सिर उगने लगें तब तो लड़ाई में ऐसे व्यक्तियों की थोड़ी ही मिलिट्री काफ़ी है। आज तो बहुत कोशिश करने के बावजद भी डॉक्टर लोग मस्तिष्कारोपण (Brain transplantation) नहीं कर सके।

आप देखेंगे कि देवियों की कथा में भी कई ऐसे असुरों के प्रसंग आते हैं कि जब उन्हें मार गिराया जाता था तब पथ्वी पर उनके गिरे रक्त से और असुर पैदा हो जाते थे। रावण को भी तो एक राक्षस अथवा असुर ही कहा जाता है और राक्षस अथवा असुर तो राक्षसपन और आसुरीयता ही की प्रतिमूर्ति (Embodiment) के ही नामान्तर हैं।

अतः यदि इस दृष्टिकोण से देखा जाये तभी रावण के सिर कटने व फिर से उग आने की बात समझ में आती है और रावण के दस सिर होने की बात भी स्पष्ट हो जाती है। इस तरह इस प्रसंग पर विचार करने के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना होगा :

१. रावण का अर्थ है—रुलाने वाला अथवा दुःख देने वाला।

२. असुर अथवा राक्षस—आसुरी अथवा राक्षसी गुण।

३. दस सिर—पुरुष और नारी में ५-५ आसुरी लक्षणों के प्रतीक अथवा नर-नारी से बने ऐसे समाज के बोधक जिनके विचारों और संस्कारों में ५-५ विकार हों।

४. सिर काटना—विकार को मिटाने अथवा बुरे संस्कार को मारने का प्रयत्न।

५. सिर का फिर से पैदा हो आना—विकार का फिर से उत्पन्न हो जाना अथवा बुरे संस्कार की फिर से अभिव्यक्ति हो जाना।

निष्कर्ष

उपरोक्त रीति से विचार करने पर हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि राम-कथा के इस प्रसंग से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि हम एक-एक विकार को मारने की कोशिश करेंगे तो फिर सारे विकार नहीं समाप्त कर पायेंगे क्योंकि वे विकार

अथवा संस्कार फिर-फिर प्रगट हो जायेंगे। उन पर तो एक-साथ ही आक्रमण करना जरूरी है क्योंकि इन सब विकारों का सम्बन्ध एक ही जड़ (देहाभिमान) से है। देहाभिमान रूपी जड़ को नष्ट किये बिना आसुरीयता के ये मुख बने ही रहेंगे। पुनश्च, राम-बाण के बिना अन्य किसी के बाण से ये कट भी नहीं सकते। भाव यह है कि कोई भी साधु-सन्त अथवा ऋषि-मुनि इन विकारों को नष्ट नहीं कर सकते बल्कि रावण साधु वेष में भी आ सकता है और ऋषि-मुनि भी रावण द्वारा आतंकित होकर उसके नाश के लिए भगवान के अवतरण की चेष्टा करते हैं। सीता-जैसी पतिव्रता नारी को भी रावण अपने चंगुल में करने के लिए मायाजाल फैलाता है। गोया देहाभिमान और मनोविकार किसी-न-किसी रूप में हरेक को अपने कारावास में बन्दी बनाये हुए अथवा पीड़ित किये हुए हैं और उनमें से कोई भी केवल अपने पुरुषार्थ से मुक्त नहीं हो सकता। क्योंकि रावण के बारे में कहा गया है कि वह महाबली था। और, केवल भगवान ही अवतरित होकर मनुष्यों को उसके त्रास से बचा सकते हैं।

अतः कथा के इस निष्कर्ष को हमें भली-भाँति बुद्धि में धारण करना चाहिए कि हमारे सब दुःखों का मूल कारण पाँच विकारों रूपी सिरों का समूह है जिसे रावण नाम दिया जा सकता है और उस महाबली रावण को परमात्मा के अवतरण होने पर ही मारा जा सकता है तथा उसकी लंका-नगरी को मिटाया जा सकता है।

कुम्भकर्ण का प्रसंग

रावण के पुतले के अतिरिक्त कुम्भकर्ण को भी जलाया जाता है। एक प्रकार से वह भी उसकी आसुरी सेना का एक बड़ा सेना नायक है। उसको मारना भी एक बहुत बड़े महत्त्व की बात है। राम-कथा में कुम्भकर्ण का प्रसंग न केवल एक मुख्य प्रसंग है बल्कि एक हास्यप्रद प्रसंग भी है। कुम्भकर्ण के बारे में कहा गया है कि वह छः महीने सोता था। छः महीने तक तो कोई अफ़ीम खाने पर भी नहीं सो सकता। मनुष्य के शरीर की अवस्था व्यवस्था ही ऐसी है कि वह एक सप्ताह भी लगातार नहीं सो सकता। अतः अक्षरार्थ में तो यह स्वीकार ही नहीं किया जा सकता कि कोई व्यक्ति छः महीने सो सकता है। केवल आध्यात्मिक अर्थ में ही इस प्रसंग को समझा जा सकता है।

आध्यात्मिक भाषा में भी जो व्यक्ति अपने जीवन को महान बनाने का पुरुषार्थ न करता हो, उसके बारे में कहा जाता है कि वह तो सोया हुआ है। आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व के प्रति सतर्क होने के प्रयास को 'जागृति' (Spiritual Awakening) कहा जाता है। सोया हुआ व्यक्ति निष्क्रिय होता है। इसी प्रकार जो व्यक्ति अपने जीवन को महान बनाने के लिए प्रयत्न नहीं करता, वह जागता हुआ होने पर भी गोया सोया हुआ होता है। इस दृष्टिकोण से छः महीने सोये रहने की बात का यह अर्थ है कि आलस्य और निद्रा का एक अविश्वसनीय स्तर पर पहुँच जाना। जैसे किसी की बहुत इन्तज़ार करने पर हम उस व्यक्ति से मिलते हैं तो हम उसे कहते हैं कि हम छः घण्टे से तुम्हारी इन्तज़ार कर रहे हैं! उसका अभिप्राय यही होता है कि उस व्यक्ति को समय का कोई ख्याल नहीं, वह आलसी और सुस्त आदमी है। इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति आज परमात्मा को याद में बैठने का थोड़ा पुरुषार्थ करता है और फिर ६ दिन, ७ सप्ताह या ६ वर्ष तक कोशिश ही नहीं करता तो उस व्यक्ति के लिए कहा जाता है कि यह तो ऐसा है कि आज जागता है और फिर ६ महीने सो जाता है। ऐसा ही व्यक्ति कुम्भकर्ण है जो न केवल सो जाता है बल्कि राम के आने का संदेश पाकर भी नहीं जागता। परमात्मा के अवतरित होने की सूचना पाकर भी यदि कोई व्यक्ति सोया रहे तब तो निद्रा की भी अति ही कहेंगे।

इस दृष्टिकोण से हमें राम कथा के इस प्रसंग से यह निष्कर्ष लेना चाहिए कि हम आलस्य और प्रमाद को अथवा तमोगुणी निद्रा का अन्त करें तभी रावण को मारने का भी पुरुषार्थ हो सकेगा।

दुखों का अन्त

ब्र० कु० सूरज कुमार, माउण्ट आबू

उसे जन्म लेते ही सामाजिक बन्धनों के कारण बाहर फेंक दिया गया···यह उसके कितने भयंकर पापों का फल था जो उसने माँ की एक भी पुचकार न देखी । उस पर दृष्टि पड़ी एक निर्धन दम्पत्ति की, जो सन्तान के प्यासे थे और जो सन्तान की प्राप्ति हेतु प्रभु से कामना करते हुए उधर से गुज़र रहे थे। उन्होंने उसे देखा और "प्रभु ने हमारी आवाज सुन ली"—ऐसा कहकर अपनी गोद की बच्ची बना लिया। और नाम रक्खा "चारू"। निर्धन दम्पत्ति के आँगन में चारू की किलकारियों ने एक नूतन रस का सृजन किया। जो आँगन अपनी भयावहता की छाप से दम्पत्ति को नीरस करता था, वह अब सुखद लगने लगा। आँगन में बच्चों का भी क्या महत्व है, यह उन्होंने खूब जाना और कल्पना की कि यदि संसार के आँगन में ये निर्दोष, पावन बच्चे न हों तो यह संसार भी श्मशान से कम न लगे।

चारू बढ़ने लगी···उसकी मेधावी बुद्धि, उसका शील स्वभाव, उसके सुन्दर विचार माँ-बाप को गौरान्वित करते थे। सभी यही कहते थे कि चारू भगवान ने ही इन्हें प्रदान की है। और माँ भी चारू की प्रशंसा को अपनी ही प्रशंसा समझ कर फूली नहीं समाती थी। अब चारू बड़ी हो चुकी थी और माँ-बाप को वही चिन्ता होने लगी जो सभी को होती है। परन्तु बिछुड़न की कल्पना ही उन्हें उदास करने लगी। १६ वर्ष किस तरह खुशियों में बीते और अब पुनः वही नीरसता···परन्तु करें भी क्या··· समाज का अटल नियम···आखिर उन्होंने चारू के हाथ पीले कर ही दिये। परन्तु यह बिछुड़न उन्हें ऐसा ही लगा कि मानों वे पुनः सन्तान विहीन हो गये हों। कैसा है यह पारिवारिक मोह···जिसमें आज प्रत्येक इन्सान बन्धा है···और जिससे चाहते हुए भी वह मुक्त नहीं हो पाता। परन्तु यह मोह यदि सच्चे स्नेह में रूपान्तरित हो जाए तो जीवन में सुखों के पुष्प महकने लगें।

चारू के १६ वर्ष तो निश्चिन्तता व खुशियों में बीते परन्तु अब भाग्य ने साथ छोड़ना चाहा। उसे यह भी पता लग चुका था कि वह किसी की अवैध सन्तान है। उसे उसके माँ-बाप का सही ज्ञान न था। यह बात ससुराल वालों को भी ज्ञात हो चुकी थी। अब उनका व्यवहार बदला, ताने प्रारम्भ हुए और चारू कर्ण की तरह प्रतिशोध की भावना में जलने लगी।

यातनाएँ बढ़ीं और वही कुछ होने लगा जो कलियुग के इसी अन्तिम काल में अनेक नव विवाहितों के साथ दहेज के कारण होता है। जहाँ मनुष्य, मनुष्य के प्यार को कौड़ी सम व धन को सर्वस्व मानकर अमानवीय व्यवहार पर उतर आता है। उसे यह भूल जाता है कि मनुष्य ही सबसे बड़ी निधि है। धन तो अस्थाई है···जो कुछ एक वफादार मनुष्य कर सकता है, वह कोटी धन नहीं··· परन्तु कलियुग के अन्त की मन्दमति मानवता धन व वैभवों को ही जीवन जानकर अशान्ति के गर्त में डूबी चली जा रही है।

चारू को भूखा रहना पड़ा, उसे जलाने का दुस्साहस किया गया, उस पर उबलता पानी डाल दिया गया, रात-दिन उससे काम लिया गया, उसे लाठियों से पीटा गया, पर राक्षस मानव को सन्तोष नहीं हुआ। और चारू प्रतिदिन मानो जहर का घूंट पीकर रह जाती थी। वह असहाय थी···अपने भाग्य को कोसती थी, हाय···ऐसा मैंने क्या पाप किया···सारा संसार तो सुखी है, मुझ पर ही ये दुख के काले बादल क्यों···हे प्रभु, मैंने भला तुम्हार क्या बिगाड़ा है···तू भी इन्हें सद्बुद्धि क्यों नहीं देता। क्या तू भी मेरी पुकार नही सुनेगा। और इन्हीं दुखद घड़ियों में वह रैना बिताया करती थी।

यह भेद खुल जाने पर कि उसके माँ-बाप भी सगे नहीं है अब वह उन पर भी कुछ अधिकार नहीं समझ पाती थी। और जिनके आँगन को उसने १६ वर्ष तक महकाया था, वे भी अब उससे किनारा करना चाहते थे। अब यदि उसके साथ था तो उसका उल्टा हुआ भाग्य···

४ वर्ष यों ही बीत गये। न उसे नींद का सुख था न भोजन का सन्तोष, वह तो जैसे कि भूखी थी···४ वर्ष उसे यों लगे मानो ४ युग हों···उसका कोई सहारा नहीं था। और तभी उसे सहारा मिला उसके चाचा द्वारा, जिसने उसे सरकारद्वारा चलाये जा रहे एक 'नारी उत्थान केन्द्र' में रखा दिया। अब वह रोज की खिट-पिट से तो दूर थी। वह उस पिशाच पति को भी छोड़ चुकी थी···परन्तु बीती दुख भरी कहानी अब भी उसे चैन से नहीं सोने देती थी। वह रात भर रोती था, उसे इस संसार में कोई भी अपना कहने वाला नजर नहीं आता था···उसे प्यास थी कि कोई उसे कह दे कि चारू तुम मेरी हो। वह अपने भाग्य को कोसती थी, और चारा भी क्या था···कभी-कभी उसका दिल दहल उठता था···मन काँपने लगता था··· परन्तु अचानक ही कोई अज्ञात-शक्ति उसे ढाढस बन्धा जाती थी। यह उसके भावी सुखों का संकेत था।

और जल्दी ही वह दिन आया, जब उनके केन्द्र में शुभ्रवस्त्रधारिणी, कान्ति-युक्त योगिनी बहनें आईं। उन्हें देखकर ही अपनेपन का आभास हुआ। उनका मन निर्मल था, भावनाएँ निस्वार्थ थीं···उन्होंने वहाँ व्याख्यान दिया···प्रभु-आगमन का पैगाम···दुखों का और दुखों की दुनिया के अन्त का सन्देश···प्रभु मिलन का सुखद निमन्त्रण व राजयोग का सरल पथ···

चारू को ये सब सुनकर एक अजीब सा खिचाव हुआ, उसका मन शान्त होने लगा। वह उनसे मिले बिना रह न सकी और इस मिलन ने उसके सोये हुए भाग्य को जगा दिया, उससे राहू का ग्रहण हटने लगा। वे बहनें उसे अपने आश्रम पर ले गईं, जहाँ उसने ज्ञान व योग सीखकर अपने जीवन की राहें बदल डालीं।

वही दिन उसका सच्चा जन्म-दिन था···अब उसे प्रभु-प्रदत्त सत्य ज्ञान मिल चुका था···मन का अन्धकार व दुखों का आक्रोश समाप्त हो चुका था···प्रतिशोध की भावना शान्त हो चुकी थी। आत्म-ग्लानि, आत्म-सम्मान में बदल चुकी थी।

एक दिन प्रातः जब वह ४.० बजे उठी, उसके परमप्रिय परमपिता की आवाज उसके मन में गूँजने लगी—"चारू तुम मेरी हो", बस इसी की तो उसे इन्तजार थी। और यह सोचकर कि स्वयं भगवान कह रहा है, उसका रोम-रोम पुलकित हो उठा, पग नाचने लगे, मन गुनगुनाने लगा···

तुम्हें पाके बाबा···पा ली खुदाई
अब रोज मिलने की घड़ियाँ हैं आई।

दिनोंदिन उसके चेहरे की कान्ति बढ़ने लगी। उसे कौन मिला···वही, जिसकी क्षणिक झलक के लिए ऋषि मुनी गुफाओं में इन्तजार कर रहे हैं··· वही, जिसकी क्षणिक आवाज सुनने के लिए लाखों भक्त प्यासे हैं···वही, जिसके क्षणिक मिलन के लिए तपस्वी अन्न जल छोड़कर तपस्या में मग्न हैं···।

अब चारू से अधिक भाग्यवान कौन हो सकता था, जिसे घर बैठे भगवान मिल गये···इतना ही नहीं, बल्कि जिसे प्रभु ने स्वीकार कर लिया··· अपनी गोद का बच्चा बना लिया···दुखों के आँसू पौंछ डाले···अपनी शीतल छाया में बैठा लिया···। अब चारू निशि-दिन अपने भाग्य को सराहती थी। परन्तु···

जब कभी उसे उसके २० वर्षों की लम्बी गाथा याद आ जाती थी, तो मानो पुनः मूर्छित हो जाती थी। अथाह सुखों का व अथाह दुखों का मेल हो जाता था। उसे याद करके चारू के होश उड़ जाते थे। न चाहते भी एक-एक घटना अचानक ही उसकी आँखों के आगे घूमने लगती थी। वह सोचती थी कि ये दिन फिर न लौटें क्योंकि अब

उसे अथाह ईश्वरीय सुखों का आभास हो चुका था।

अब वह अपना जीवन प्रभु-अर्पण कर चुकी थी। उसके तन-मन पर उसी परम प्रियतम का अधिकार था, परन्तु फिर भी कभी-कभी उसका मन उदास होने लगता था। एक दिन उसने अपनी एक शुभ-चिन्तन बहन को अपनी ये व्यथा सुनाई। उसकी कहानी सुनकर किसका मन न रो पड़ेगा। वह उसकी सहानुभूति की पात्र बन गई।

अब उसने चारू को नई रोशनी दी।

चारू, अब तुम प्रभु की शरण में हो···बलिहारी है उन दुखों की जिन्होंने तुम्हें तुम्हारे परम प्रियतम से मिला दिया···तुम उन्हें दुख न समझो। वे दुख इन सुखों के जन्मदाता थे। सोचो···यदि वे घड़ियाँ न आतीं तो तुम आज यहाँ क्यों होती! इसलिए चारू···यह सोचकर मन भारी न करो कि ये क्यों हुआ। जो हुआ, वही सत्य था, वही अटल था और वही कल्याणकारी था। यदि वह न होता तो आज यह भी न होता। इसलिए चित्त को सरल कर दो बहन···।

अब वर्तमान का ईश्वरीय आनन्द लो। वर्तमान के सुखों को अतीत के दुखों की याद में खो देना समझदारी तो नहीं है। अब सब कुछ भूल जाओ···एक नाटक की न्याई दृष्टा बन जाओ कि वह कोई और चारू थी, मैं तो प्रभु की चात्रक चारू हूँ···फिल्म का वह सीन लिपट चुका जो अब नहीं खुलेगा, अब तुम अपने मन में उसे बार-बार क्यों खोलती हो। जो कुछ रील में बन्द हो गया, उसे सदा के लिए ही बन्द रहने दो।

चारू के नयन छलकने लगे···

चारू प्रिय, अब जरा अपने महान लक्ष्य की ओर देखो। जीवन का वह सफर तुम पार कर आई और धन्यवाद की पात्र हो जो तुम जीवित हो। अब वही सोचो जो तुम्हें करना है। जो नहीं करना है वह कदापि नहीं सोचो।

चारू, ये प्रभु-मिलन के थोड़े से दिन किन्हीं पुण्यों का फल है। इसे अतीत की दुखद यादों में मत बिताओ। तुम्हें मालूम है चारू कि तुम्हें क्या करना है?

अनेक नारियाँ इसी तरह त्रसित हैं, पीड़ित हैं, यातनाएँ सह रही हैं, तुम्हें उन्हें सुख देना है। परन्तु कैसे दोगी चारू···?

घर घर ज़ाकर—चारू बोली।

परन्तु उससे पूर्व तुम्हें इस जीवन को सम्पूर्ण सुख-स्वरूप बनाना होगा। इतना शान्त चित्त बनना होगा जो तुम्हें देखते ही दूसरों के चित्त शान्त हो जाएँ और चारू तुम्हें इतनी ईश्वरीय शक्तियों से सुसज्जित शक्ति स्वरूपा बनना होगा जो अनेक नर पिशाचों के दिल उनके पाप से दहल उठें···वे आसुरी प्रवृत्तियों का त्याग करके सत्य की राह अपना लें···तो बोलो चारू हिम्मत है?

हाँ···यही तो मुझ करना है। आज विश्व में अनेक पीड़ितों का दिल रो रहा है। उनकी करुण आवाज़ ही तो मुझ रुलाती है। चारू ने उत्तर दिया।

तो चारू, तुम्हें तो समस्त विश्व को चुनोति देनी है···खुशियों का भण्डार बाँटना है···तुम्हारा मन उदास क्यों? इस उदासी को सदा के लिए सागर में फेंक दो। और आज से जीवन को ईश्वरीय खुशियों से इतना भर दो जो तुम्हें निहारते ही लोगों के दुख के मेघ हट जाएँ। भगवान के बच्चे ही यदि उदास होंगे तो औरों का क्या हाल होगा। पीछे मुड़कर न देखो चारू···आगे दौड़ो, मंजिल लम्बी है और समय कम···

चारू को नूतन आत्म-विश्वास प्राप्त हुआ। उसने सुख की ठण्डी श्वॉस ली, मानो अतीत सदा के लिए लोप हो गया हो। उसका मन नाच उठा और अपने भाग्य की सराहना करते हुए, प्रभु को धन्यवाद देते हुए चारू ने महानता के दिव्य पथ पर कदम रक्खा।

□

बहरा परिवार

ब्र० कु० चक्रधारी, दिल्ली

एक परिवार के सभी व्यक्ति बहरे थे। उस परिवार में पिता की मृत्यु हो गई। अतः अब खेती की सारी ज़िम्मेवारी बेटे पर ही आ गई। बेटा, जो कि लगभग १८-१९ वर्ष का था, प्रातः को बैल लेकर खेतों की ओर रवाना हुआ ताकि वहाँ जाकर हल से ज़मीन को जोता जाए। अभी घर से कुछ ही दूर गया था कि रास्ते में उसे एक पण्डित जी आते हुए दिखाई दिये। पण्डित जी ने सोचा कि यह प्रातः का समय है, इस व्यक्ति को यदि कोई खुशी की बात सुनाई जाएगी तो यह हमें दान देगा। इस विचार से उसने अपनी बही की शक्ल की एक समय सारिणी और लग्न-दर्शिका (जन्त्री) खोली और उसमें बनी ग्रह गति और नक्षत्र गति के चित्र को देखते हुए वह अपनी अंगुलियों पर कुछ गिनने लगा और ज़मींदार के पुत्र के निकट आ खड़ा हुआ। पण्डित जी ने ज़मींदार को कहा—महाराज, आज आपके ग्रह अच्छे हैं, दिन अच्छा बीतेगा, घर में शान्ति होगी और क्लेश-निवारण होते दिखाई देंगे। ज़मींदार जी तो बहरे थे, उनके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ा। उन्होंने तो पण्डित जी को अंगुलियों पर गिनते देखा था। हाथ में बही खाते जैसी एक पोथी देखी और अन्त में हाथ फैलाते हुए, कुछ बोलते हुए और मुख मुद्रा द्वारा कुछ माँगने की चेष्टा करते हुए देखा था। अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करते हुए उन्होंने सोचा कि यह व्यक्ति कुछ कर्ज़ मांगता है। यह बुजुर्ग व्यक्ति है, शायद हमारे पिताजी का दोस्त रहा होगा और उन्होंने इससे कुछ उधार लिया होगा। मालूम होता है कि बही खाते से देखकर, अंगुलियों पर हिसाब लगाकर यह अपना उधार वसूल करना चाहता है। अतः उसने उस बुजुर्ग व्यक्ति को कहा—"महाराज, आप इतना सारा जो गिनती करके मुझे बता रहे हैं कि मेरे पिताजी ने आपसे कितना उधार लिया था, वह ऋण मैं सारा तो चुका नहीं सकता···" उसकी बात को पूरा करने से पहले बीच ही में पण्डित जी ने शायद कहा कि वे कर्ज़ तो मांग नहीं रहे। परन्तु ज़मींदार ने सोचा कि शायद यह कह रहा है कि इतने से तो काम नहीं चलेगा। इसलिए उस बहरे ज़मींदार ने कहा—"महाराज, बाकी तो मैं धीरे-धीरे दूंगा एकदम सारा कैसे दूँ। अभी तो यह ही कह सकता हूँ कि ये बैल ले लीजिए। मैं हाथ जोड़कर कहता हूँ कि आप ये दोनों बैल ले जाइये।

पण्डित जी भी आश्चर्यान्वित हो रहे थे। वे सोच में पड़ गए कि या तो यह व्यक्ति कोई बहुत बड़ा दानी है जो यह कहता है कि "अभी दो बैल ले जाइये, फिर भविष्य में और दे दूंगा।" और या हो सकता है कि इसके पिताजी ने हमारे बुजुर्गों से कोई कर्ज़ लिया हो और वो इसे उसके बारे में कुछ कह गए हों। अब इन दोनों में से बात कोई भी हो, फिलहाल ये बैल तो हमें दे ही रहा है। इन्हें ले जाने के लिए तो यह स्वेच्छा ही से कह रहा है और स्वयं ही उनकी रस्सी छोड़कर मेरे हाथ में दे रहा है। मक्खन खाते तो किसी के दाँत नहीं टूटते; तब इससे बैल लेते मुझे क्या मुसीबत है कि मैं इसे मना करूँ। मुझे कुछ मिल ही तो रहा है जो मेरी माँग से भी ज़्यादा है। यह सोचकर पण्डित जी बैल लेकर चलते बने।

इधर बहरा ज़मींदार अपने घर में लौटा। उसकी माँ समझ ही नहीं सकी कि आज यह जल्दी क्यों लौट आया है? उसने सोचा कि पहला दिन है, बेटा थक गया होगा, या तो बेटे को भूख लग आई होगी। इसलिए उसने खाना डालकर बेटे के आगे रख दिया। वह अभी एक ग्रास खाते ही माथे पर हाथ मारकर कहने लगा कि खाना खाकर क्या करूँगा। मेरी तो तकदीर ही खोटी है। पिताजी इतना कर्ज़ छोड़ गये हैं, मैं तो सारी उम्र भी नहीं चुका पाऊँगा। अभी आज दो बैल देकर मुश्किल से जान छुड़ाई है, वर्ना वह तो लम्बी बही निकाल कर रास्ता रोके खड़ा था।

वह ऐसे कह ही रहा था कि उसकी बहरी माँ

अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करते हुए बोली— "बेटा, तू बिल्कुल ठीक कहता है। (अपने माथे पर हाथ मारते हुए) सचमुच हमारी तकदीर खोटी है कि ऐसी बहू मिली। उसने आज इतना नमक डाल दिया है कि खाना ही मुश्किल है। इसने तो सारा हमारा घर बरबाद कर दिया है।" यह कहते ही वह अपनी बहु की ओर दौड़ी और जाते ही डाँट-डपट करने लगी।

अपनी सास को हाथ उठाते देख और उसकी डाँट-डपट सुनकर बहरी बहु जो अभी छोटी आयु ही की थी, अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करते हुए सोचने लगी कि मेरी भी तकदीर खोटी है। वह बोली, तुम यों ही मुझ पर चोरी का दोष लगाते हो। मैं सच कहती हूँ कि मैंने चोरी की ही नहीं। मेरी तकदीर ही खोटी है कि तुम लोग रोज मुझ पर कोई-न-कोई दोष लगाते हो।

इधर बहरी सास को महसूस होता था कि एक तो बहु ने नमक ज़्यादा डाला है और फिर सामने बोलती है। बहरी बहु समझती थी कि यों ही मुझ पर मिथ्या दोषारोपण करते हैं और बहरा बेटा समझता था कि सास और बहु पिताजी की किसी बात को लेकर आपस में झगड़ा कर रहे हैं। तीनों ही बहरों ने कल्पना का प्रयोग करते हुए घर में कोहराम मचा रखा था।

इस प्रकार उनका बहरापन व उनकी मिथ्या कल्पना-शक्ति ही उनके दुःख का कारण बने हुए थे और वे तीनों अपनी-अपनी तकदीर को कोस रहे थे तथा कहते थे कि हमारे कर्म ही खोटे हैं कि हमारी यह हालत है। आज इसी प्रकार हम देखते हैं कि लोग अपनी-अपनी मिथ्या कल्पना शक्ति का प्रयोग करके कहते हैं कि इस दुनिया में दुःख और अशान्ति सदा से ही चली आई है। इस कथन का तो यह अर्थ होता है कि प्रारम्भ ही से मनुष्य के कर्म खोटे रहे हैं अथवा कि प्रारम्भ ही से मनुष्य को कर्मों का उधार चुकाना पड़ रहा है। इसका तो अपरोक्ष रूप से यही अर्थ होता है कि मानों परमपिता परमात्मा ने मनुष्य पर कर्ज़ ही छोड़ा है! इस भ्रान्ति के फलस्वरूप उन्हें जो भी मिलता है, उससे वे संदेह ही से बात करते हैं।

परन्तु परमपिता परमात्मा कहते हैं कि मैंने ऐसी सृष्टि बनाई ही नहीं कि जिसमें शुरू से ही दुःख और अशान्ति थी। मैंने मनुष्यात्माओं पर कोई कर्ज़ रखा ही नहीं परन्तु आज मनुष्य इतने बहरे हैं कि कुछ सुनते ही नहीं और बहरों के परिवार की तरह से अपनी कल्पना की दौड़ दौड़ते हैं। □

अन्तर्मुखता (पृष्ठ २० का शेष)

अन्तर्मुखता से अन्य गुणों की उत्पत्ति

एक अन्तर्मुखता का गुण धारण करने से अन्य कई दैवी गुणों की उत्पत्ति स्वतः ही होती है।

- □ अन्तर्मुखता है, तो सत्य ज्ञान देने की शक्ति रहेगी अर्थात निडरता का गुण रहेगा।
- □ अन्तर्मुखता से सहनशीलता आती है, क्योंकि अन्तर्मुखता में रहने वाला कभी भी आवेश या आक्रोश में नहीं आवेगा।
- □ अतर्मुखता के माध्यम से ज्ञान की गहराई में जाने से गंभीरता आती है तथा जितनी गंभीरता होगी उतनी ही शीतलता रहेगी। ठीक उसी प्रकार जैसे सागर की जितनी गहराई में जाओ हलचल समाप्त होकर शीतलता बढ़ती जाती है।
- □ अन्तर्मुखता से रूहानियत और मधुरता आती है। रूहानियत की कमी का कारण है— अन्तर्मुखता की धारणा नहीं होना।
- □ जितनी अन्तर्मुखता होगी, उतनी ही सरलता भी होगी।
- □ अन्तर्मुखता से हर्षितमुखता का गुण आता है, क्योंकि अन्तर्मुखता में किसी प्रकार का तनाव अथवा द्वंद्व नहीं रहता है।
- □ इन सबके अतिरिक्त अन्तमुखता से सन्तुष्टता का जन्म होता है।

अन्तर्मुखता

ब्र० कु० राजेन्द्र ललावत, उज्जैन

दिव्य गुणों की लम्बी फेहरिस्त में अन्तर्मुखता का अपना एक विशिष्ट स्थान है। इसी अन्तर्मुखता के गुण के महत्व को "अन्तर्मुखी सदा सुखी" कहकर व्यक्त किया जाता है। अन्तर्मुखता ही महान आत्माओं की महानता की कसौटी है तथा उनके जीवन को सुशोभित करने वाला आभूषण है। अन्तर्मुखता से जीवन में श्रेष्ठता आती है तथा विचार-शक्ति प्रबल होती है। अन्तर्मुखता की गुफा में बैठकर ही योगी तपस्या करता है और साधक अपनी सिद्धि को पाने में सफल होता है। अन्तर्मुखता ही बुद्धि को हल्कापन प्रदान करते हुए आत्मिक सुख की अनुभूति कराता है। मनसा सेवा एवं योग की ऊँची स्थिति के लिये भी अन्तर्मुखता एक आवश्यक अंग है। अन्तर्मुखता भरपूरता अथवा सम्पन्नता की निशानी है, जबकि बाहरमुखता खालीपन का द्योतक है।

अन्तर्मुखता क्या है ?

सामान्यतः अन्तर्मुखता का अर्थ चुप अथवा शान्त रहने से लगाया जाता है। लेकिन अन्तर्मुखता का यह अर्थ बहुत ही संकुचित है। क्योंकि यदि कोई ऊपर से तो बहुत ही शांत दिखाई देता है, चुप रहता है लेकिन यदि उसके अन्तर्मन में अनेक प्रकार की बातें चल रही हैं, संकल्प-विकल्पों का तूफान मचा हुआ है, तो क्या उसे अन्तर्मुखी कहा जावेगा ? कदापि नहीं। वास्तव में "अन्तर में जो आत्मा है जो शान्त स्वरूप है, पवित्र स्वरूप है—तो आत्मा जब अपने इस वास्तविक स्वरूप में रहती है अर्थात शान्त स्वरूप रहती है उसे ही अन्तर्मुखता कहा जाता है"। कहने का तात्पर्य यह है कि बाह्य रूप से शांत रहना और अन्तर्मन से शांत रहना—इन दोनों को मिलाकर जो स्थिति बनती है, उसे ही अन्तर्मुखता कहा जावेगा। अन्तर्मुखता में बाह्य शांति के साथ-साथ चित्त की शान्ति भी समाई होती है। वास्तव में तो अन्तमुखता स्वचिन्तन का ही दूसरा नाम है। आत्मा जब चुप रहेगी तो गहराई से स्वचिन्तन करेगी और साथ ही साथ प्रभुचिन्तन भी हो सकेगा।

अन्तर्मुखता के लाभ

अन्तर्मुखता का गुण अपने अन्दर अनेक विशेषताएँ लिये हुए है। इस महान गुण की धारणा से जो लाभ होते हैं, उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—

१—एकांत और मनन के लिये अवसर—अन्तर्मुखता में रहने से एकांत और मनन के लिये पर्याप्त अवसर मिलता है। अन्तर्मुखता की धारणा से व्यर्थ चिन्तन और बातें नहीं रहती हैं, इसीलिये अन्तर्मुखी होकर रहने वाला कभी व्यर्थ संकल्पों की शिकायत नहीं करेगा। व्यर्थ संकल्प नहीं होंगे, तो सहो रीति से आत्मचिन्तन और परमात्म-चिन्तन हो सकेगा। इस प्रकार अन्तर्मुखता एकांत और मनन के लिये अवसर प्रदान करते हुए आत्मिक बल में भी वृद्धि करता है। क्योंकि आत्मिक बल में कमी का कारण है—व्यर्थ संकल्प एवं चिंतन और अन्तर्मुखता की स्थिति में व्यर्थ संकल्पों एवं चिन्तन का कोई स्थान नहीं होता है।

२. वायुमण्डल के दोष से बचाव—अन्तर्मुखता में रहने वाला वायुमण्डल के दोष से सुरक्षित रहेगा। जिस प्रकार किसी वस्तु पर आवरण डाल दिया जाता है, तो वह वस्तु बाहरी वातावरण के प्रभाव से सुरक्षित रहती है, ठीक उसी प्रकार अन्तर्मुखता के आवरण में रहने से बाहरी दूषित वातावरण का प्रभाव आत्मा पर नहीं होता। इस प्रकार आत्मिक उन्नति में पर्याप्त सहायता मिल सकेगी।

३. माया के विघ्नों से रक्षा—अन्तर्मुखता का गुण माया (विकारों-बुराईयों) के विघ्नों से रक्षा के लिये कवच का कार्य करता है। क्योंकि अन्तर्मुखी होने के कारण माया को प्रवेश का मौका ही नहीं मिल पाता है। यदि विघ्न आ भी जाते हैं, तो अन्तर्मुखी निडरता से उनका सामना करता है, क्योंकि अन्तर्मुखता की धारणा से आत्मिक बल में पर्याप्त वृद्धि होती है।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

विश्व की बागडोर युवा के हाथ में

ब्र० कु० आत्मप्रकाश, आबू पर्वत

इस बार प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर आबू की पहाड़ियों की गोद में स्थित श्वेत वस्त्रधारी आन्तर्राष्ट्रीय राजयोग भवन में चले हुए राजयोग शिविर में एक नवयुवक पत्रकार भाई विलास तायडेजी, यवतमाल (महाराष्ट्र) से पधारे थे। वहाँ के पवित्र तथा शान्त वातावरण ने उन्होंके मन पर गहरा प्रभाव डाला था। त्रिदिवसीय राजयोग शिविर के उपरान्त उन्हों का एक दिन और रहना हुआ। उस दिन उन्होंने राजयोग भवन के इन्चार्ज ब्र० कु० बावाराम भाई से पूछा कि इस राजयोग शिविर के अन्तर्गत मैंने सुना था कि यहाँ कोई सुशिक्षित व्यक्ति किचन डिपार्टमेन्ट में सेवा पर उपस्थित है, उन्होंसे मैं व्यक्तिगत चर्चा करना चाहता हूँ, क्या यह सम्भव है? बाबाराम भाई ने कहा—क्यों नहीं, चलो अभी ही मैं आपकी उन्होंसे मुलाकात करा देता हूँ। तत्पश्चात उन्होंने हम दोनों की मुलाकात करा दी। लम्बे समय तक भोजन का मन पर प्रभाव, कर्मयोग का अभ्यास तथा अन्य कई बातों पर चर्चा चलती रही।

अन्त में उन्होंने अपना राजयोग शिविर का अनुभव सुनाते हुए कहा कि कल जब हम शिविरार्थीयों के साथ इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणीजी मिल रही थीं तो मुझे एक दिव्य अनुभव हुआ। मुलाकात करते समय उन्होंके नयनों से माँ का बेहद प्यार बरस रहा था। उन्होंके नयन मुझे शीतल चन्द्रमा के प्रकाश के पुँज अनुभव हो रहे थे। उन्होंके प्रतिभाशाली तथा दिव्य व्यक्तित्व की मुझ पर अनोखी छाप लगी है। तो क्या उस दादीमाँ के दर्शन करने की सुवर्णसंधि मुझे दुबारा मिल सकती है?

वास्तव में उन दिनों में दादीजी बेहद सेवा में एकदम व्यस्त थीं। लेकिन उन्होंकी प्रबल इच्छा को देखकर मैंने अपनी कोशिश जारी रखी और सचमुच स्नेहमयी वरदानी दादीजी ने उन्होंसे मुलाकात करना सहर्ष स्वीकार किया। तत्पश्चात मैंने उन्होंकी दादीजी से मुकाकात करा दी।

दादीजी से मुलाकात करते समय उस पत्रकार भाई ने दादीजी से कुछेक प्रश्न भी पूछे थे। उस समय उन्होंका आपस में जो वार्तालाप हुआ वो उन्होंके ही शब्दों में पाठकों के लाभार्थ मैं यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

प्रश्न—दादीमाँ, इस आन्तर्राष्ट्रोय युवा वर्ष के अन्तर्गत आपने युवा उत्थान के लिए कौन-सी योजनाएँ बनाई हैं?

उत्तर—वैसे तो हर वर्ष हम युवा उत्थान के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएँ बनाते ही रहते हैं। लेकिन इस वर्ष विशेष युवा उत्थान से भारत उत्थान अर्थ "भारत युवा पद-यात्रा" की योजना बनाई है। इस योजना को सफल बनाने हेतु विशेष युवा जो इस विश्व-विद्यालय के नियमित छात्र हैं, उन्हें शक्तिशाली स्थिति बनाने के लिए योग भट्टी के विशेष प्रोग्राम में आमंत्रित किया था। उसमें भारत के कोने-कोने से युवा पधारे थे। उस योग भट्टी के दौरान विशेष अनुभव युक्त ज्ञान के क्लासेज भी कराए गए।

दूसरी बात, इस वर्ष राजयोग एज्यूकेशन एवं रिसर्च फाउन्डेशन का एक विंग "शान्ति के लिए युवा" इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने स्थापित किया है ताकि इससे युवकों के लिए विशेष और आम जनता के लिये भी कार्यक्रम बनाए जा सकें।

प्रश्न—दादीमाँ, इस "भारत यवा पद यात्रा" का उद्देश्य क्या है?

उत्तर—इस समय भारत विशेष, आम सारी दुनिया में दिन प्रतिदिन कुरितीयाँ और हिंसात्मक कार्य

बढ़ते जा रहे हैं जिससे दुख और अशान्ति बढ़ती जा रही है। आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है जिससे सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। इन सभी समस्याओं का हल करने के लिए यवा वर्ष के अन्तर्गत इस संस्था के हज़ारों युवकों ने प्रतिज्ञा की है कि 'भारत युवा पद यात्रा' द्वारा भारत के लोगों में आध्यात्मिक जागृति लायेंगे। उन्होंको अपने अनुभव की शक्ति से अनेक प्रकार की बुराईयों तथा व्यसनों से मुक्त करेंगे।

प्रश्न—दादीमाँ, जो पदयात्री इस 'भारत युवा पद यात्रा' में भाग ले रहे हैं, उन्होंको कौन-सी विशेषताओं के आधार पर चुना गया है ?

उत्तर—इस पदयात्रा में जो पदयात्री जा रहे हैं, उन्होंको हमने निम्नलिखित विशेषताओं से चुना है ताकि वे अपने प्रैक्टिकल जीवन द्वारा हज़ारों आत्माओं को प्रेरणा दे सकें।

सर्व प्रथम उन्होंमें अपनी पवित्रता की धारणा मजबूत हो।

अपनी स्थिति योगयुक्त हो ताकि उन्होंसे दूसरों को अच्छे वायब्रशन्स मिल सकें।

वे शारीरिक दृष्टि से भी स्वस्थ हों ताकि निर्विघ्न रूप से यात्रा कर सकें।

उन्होंमें परस्पर टकराव का संस्कार न हो।

प्रश्न—दादीमाँ, इस युवावस्था में ब्रह्मचर्य का पालन क्यों आवश्यक है; क्या यह सम्भव है ?

उत्तर—देखो भैया, वास्तव में ब्रह्मचर्य ही बुद्धि का प्रकाश है। इससे विवेक शक्ति जागृत होती है और विवेक सद्विवेक भी बनता है। और इसकी पालना से मनुष्य का मनोबल बढ़ता है और उसके स्वभाव में एकाग्रता आती है। ब्रह्मचर्य के बिना आत्मानुभूति तथा ईश्वरानुभूति कदापि ही नहीं हो सकती है क्योंकि यह आध्यात्मिक प्रगति के लिए पहला कदम है। इसकी पालना से ही मनुष्य का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक तथा आर्थिक व सामाजिक विकास हो सकता है इसलिए इसकी युवावस्था में भी परमावश्यकता है।

और इसको पालन करना भी सम्भव बात है। पतित पावन शिव परमात्मा की मार्ग प्रदर्शना से हम उसे सरलता से अपना रहे हैं। यही तो ईश्वरीय शक्ति का चमत्कार है। उस परमात्मा ने हम सभी को ज्ञान देकर इस स्मृति में स्थित किया कि तुम देह नहीं, आत्मा ज्योतिर्बिंदु हो, मुझ सर्वशक्तिवान निर्विकार परमात्मा की समर्थ सन्तान हो और आत्मिक नाते से परस्पर भाई-भाई हो। तुम्हारे बाकी सम्बन्ध मुझ परमात्मा से हैं। इसी विधि से उसने लाखों को भोगी से योगी बना दिया है।

प्रश्न—दादी माँ, आपकी संस्था में जो भी युवा आते हैं, क्या वे कभी भी स्ट्राईक तथा तोड़फोड़ आदि में भाग नहीं लेते हैं ?

उत्तर—नहीं, क्योंकि यहाँ जो भी आते हैं वे अपने व्यवहार में नैतिकता के नियमों का पालन करते हैं। ये जाति-पाति, रंग-भेद, भाषा भेद के आधार पर न चलकर सभी के साथ सद्व्यवहार करते हैं। सदा अपने साथियों का आध्यात्मिक तथा नैतिक व सामाजिक उत्थान करने का ही उन्होंका लक्ष रहता है। उन्हें यह अनुभव हो जाता है कि साधन समस्याओं का हल नहीं कर सकते, बल्कि समस्याओं में वृद्धि करते हैं। उन्हें यहाँ सिखाया जाता है कि शान्ति की शक्ति द्वारा ही समस्याओं का हल किया जाता है। इसलिए वे कभी देश को नुकसान पहुंचाने वाली बातों में भाग नहीं लेते हैं।

प्रश्न—दादी माँ, क्या ऐसे युवावस्था में इतना संयमित जीवन जीना संम्भव है ?

उत्तर—हाँ क्यों नहीं ! आप देख सकते हैं। यह प्रश्न ही नहीं, लेकिन उसका प्रैक्टिकल रूप भी आप देख लें। हजारों युवक अपने युवाकाल में ही इन संयमों को अपना चुके हैं। और वास्तव में युवाकाल ही मनुष्य के जीवन को परिवर्तन करने का समय होता है चाहे पतन की ओर या उत्थान की ओर। इस उम्र में ही त्याग तथा भाग्य की शक्ति कार्य करती है जिस पर ही मनुष्य का भविष्य आधारित होता है।

परन्तु इसका आधार है राजयोग व ईश्वरीय मर्यादाएँ। जो जितना अधिक राजयोग अर्थात

याद की यात्रा का अभ्यास करता है, उतना ही सरलता से वह इन संयमों को अपना पाता है।

प्रश्न—दादी माँ, इस 'भारत युवा पद यात्रा' से याद की यात्रा का क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर—पैरों से यात्रा करते हुए ये राजयोगी भाई-बहनें बुद्धि की भी यात्रा करते हैं। बुद्धि की यात्रा अपने स्वीट सायलेन्स होम तक करते हैं, बुद्धि का निशाना अपने परमपिता शिव से बनाते हैं। इससे उन्हें परमात्मा के श्रेष्ठ वायब्रेशनस प्राप्त होते हैं और ये युवा यात्रा करते हुए चारों ओर शान्ति व पवित्रता के वायब्रेशन्स फैलाते हैं। इससे संसार के वातावरण को बदलने में बहुत मदद मिलती है।

प्रश्न—दादीमाँ, क्या आज के जमाने में लोगों से कमियों का तथा बुराईयों का दान लेना सम्भव है ?

उत्तर—हाँ सम्भव है। इसके अनेक प्रयोग किये गये हैं। परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य यह महसूस करें कि ये कमज़ोरी है, व्यसन है—हमें इसे छोड़ना चाहिए। और यह तब सम्भव है जब हम अपने परिवर्तित जीवन द्वारा उन्हें उनके श्रेष्ठ स्वरूप का आभास करा दें।

आज तक लाखों लोग अपनी बुराइयों को छोड़ चुके हैं और हम उन्हें यह भी सिखाते हैं कि ये बुराई पुनः आप पर हावी न हो, इसके लिए आप प्रतिदिन के लिए कुछ नियम अवश्य बनायें।

प्रश्न—दादीमाँ, कल जब मैंने आपके मुख्यालय का सर्वेक्षण किया तो देखा हर विभाग में जो भी नव-युवक भाई-बहनें नियुक्त हैं वे बिना किसी प्रबन्धक के मशीनरी जैसा काम कर रहे थे, ऐसी कौन-सी आप उन्हें शिक्षाएँ देती हैं ?

उत्तर—देखो भैया, यहाँ जो भी भाई-बहिनें ईश्वरीय सेवा पर उपस्थित हैं उन्होंके दिल में शिव परमात्मा के तथा यज्ञ सेवा प्रति सच्ची लगन है और अटूट स्नेह भी है। वे सभी जानते हैं कि यह ईश्वरीय पढ़ाई भी है तो साथ-साथ यह हमारा एक ईश्वरीय परिवार भी है। यहाँ सभी में अपनापन है। कोई भी यहाँ सरकारी नौकरी की तरह कार्य नहीं करता बल्कि सभी स्वयं को स्वयं ही जिम्मेवार समझते हैं, अपना समझकर कार्य करते हैं। सभी को यही शिक्षा दी जाती है कि हम एक हैं व एक परमात्मा के हैं और कार्य भी उसी एक का ही है।

प्रश्न—दादीमाँ, इस संस्था की विदेश में जो शाखाएँ हैं, वहाँ के युवा क्या क्या सेवाएँ करते हैं ?

उत्तर—वहाँ के युवा भी अपने तन, मन, धन से इस ईश्वरीय सेवा में सहयोग देते हैं। उन्होंका सादा जीवन और उच्च विचार व व्यवहार हजारों आत्माओं को प्रेरित करता है जिससे स्वतः ही अन्य आत्माओं के भाग्य का तारा चमकने लगता है। उन्हें एहसास होता है कि आत्मोन्नत्ति के लिए केवल भौतिकता ही नहीं लेकिन आध्यात्मिकता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्रश्न—दादीमाँ क्या सचमुच यह पदयात्रा देश का खतरा दूर करने के लिए सफल रहेगी ?

उत्तर—हाँ अवश्य, बड़ा खतरा तो मनुष्य के अन्दर छुपे हुए शत्रुओं से है। यदि इन शत्रुओं का हनन कर दिया जाए तो बाह्य शत्रु शक्तिहीन हो जाएंगे। और सभी में एकता व अखण्डता की भावना तेज़ी से जागृत की जा सकेगी। इससे सभी के विचारों में परिवर्तन अवश्य आता है।

प्रश्न—दादीमाँ, इस 'भारत युवा पदयात्रा' का समाप्ति समारोह कब और कहाँ होगा ?

उत्तर—इस' 'भारत युवा पदयात्रा' में लगभग १४०० शाखाओं के युवक भारत के दक्षिण, पूर्व, उत्तर और पश्चिम से विशाल पदयात्रा करते हुए २४ अक्टबर १९८५ (राष्ट्रसंघ दिवस पर) दिल्ली पहुँचेंगे। वहाँ विशाल युवा रैली और महोत्सव का आयोजन किया गया है। इसमें विशेष युवकों की समस्याओं पर विचार विमर्श होगा जिससे युवा वर्ग में नई आध्यात्मिक क्रान्ति की लहर फैलाकर भारत की एकता को मज़बूत कर सकें।

प्रश्न—दादीमाँ, आपका युवा वर्ग के प्रति क्या संदेश है ?

सभी युवा अब अपनी अर्न्तचेतना को जगाएँ। संसार की तृष्णाओं के पीछे भागने को ही लक्ष्य न

बनायें। अब समय है नव-जागृति का, तो युवा वर्ग को चाहिए कि वे समय को पहचानें और भारत व विश्व को बदलने में सहयोग देने के लिए मन में दृढ़ संकल्प करें। शक्तिशाली युवा अब इन व्यसनों का गुलाम न बने। इस गुलामी से स्वतंत्र होकर, मनुष्यों को सुख शान्ति का सन्देश दें।

हे परमपिता शिव के सुपुत्रो,

एक पिता की सन्तान के नाते ये सब धर्म, जाति, प्रान्त, रंग, भाषा, भेद को मिटा दो। और प्रेम के अवतार बनकर प्रेम की भरपूर गंगा बहाओ।

"युवक, बनकर प्रेम के अवतार,
घर-घर में लाओ उजियार"

हे धरती के चेतन सितारो,

अपनी रोशनी से इस घोर अन्धकारमय संसार के मनुष्यात्माओं के मन का अंधकार दूर करो और प्रेरणादायक तथा चरित्रवान जीवन से अर्थात् दिव्यगुण रूपी मोतियों की बरसात से सबके जीवन-रूपी बगिया में नई बहार ले आओ।

"युवा बनकर जग की ज्योति,
बिखरा दो चरित्र के मोती"

हे पवन पुत्र हनुमानो,

अपनी देहअभिमान की पूँछ को जलाकर इस रावण के बेहद की लंका को आग लगा दो ताकि सभी राम की आत्माओं रूपी सीताओं को रावण की जेल से सदा के लिए मुक्ति मिल जाए।

"युवा बन जाओ कर्मवीर,
मानव की जागे तकदीर"

हे नवसृष्टि के निर्माताओ,

अपने भारत माँ की कृतज्ञता के खातिर अपने सदाचार से अत्याचार तथा पापाचार को बन्द करो और बापू गांधी के रामराज्य के स्वप्न को साकार करने इस भारत माँ की गोद में अपने श्रेष्ठ कर्मों से सुनहरे स्वर्ग की स्थापना में अपना हाथ बटाओ।

"युवा तुम प्रेरक बन जाओ,
नव पीढ़ी को राह दिखाओ"

प्रश्न—दादी माँ, बस अन्तिम एक प्रश्न है कि कल जो आपने हमें आध्यात्मिक डायरी की सौगात दी, उससे मुझे "गुणों का दान देकर गुणमूर्त बनना सबसे बड़ी सेवा है" यह वरदान मिला है। तो इस **वरदान को मैं अपने जीवन में कैसे धारण करूँ ?**

उत्तर—भैया, आपको तो बहुत ही सुन्दर वरदान मिला है क्योंकि गुणवान ही सच्चा धनवान होता है और इन दिव्य गुणों की उच्चतम धारणा से ही हम भविष्य में देवता बनते हैं। तो आप रोज़ इस सलोगन को सवेरे उठते और रात्रि को सोते समय पढ़ा करो। और यदि आप नियमित रूप से ईश्वरीय पढ़ाई का अध्ययन करेंगे तो इस बात को धारण करने में बहुत मदद मिलेगी जिससे आपका जीवन बदल जाएगा और जब आप युवा बदलेंगे तो अवश्य ही युग बदलेगा। क्योंकि युवा ही छोटों तथा बड़ों का एकमात्र आधार है।

अन्त में मुस्कराते हुए दादीजी के मुख से यही मधुर बोल निकले कि—

विश्व की बागडोर है युवा के हाथ में।
और हम सभी हैं आपके साथ में॥

उपरोक्त बातें सुनकर पत्रकार भाई ने कहा—

दादीमाँ, पूरा निभाऊँगा मैं ये वायदा।
जिससे होगा मेरे साथियों को भी फायदा॥

अच्छा दादी माँजी, नमस्ते।

★

रावण के दस शीश ५ विकार नर में और ५ विकार नारी में, के प्रतीक हैं। इन विकारों को ज्ञान और योग की अग्नि से जलाकर सच्चा दशहरा मनाइये।

पूना में 'भारत एकता युवा पदयात्रा' का स्वागत महापौर भ्राता चन्द्रकान्त जी पुष्प गुच्छा देकरके करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

रोपड़ में डिप्टी कमिश्नर भ्राता कृष्ण देव अरोड़ा को ब्र० कु० राजकुमारी राखी बांध रही हैं।

जालन्धर में ब्र० कु० राज आकाशवाणी के निर्देशक भ्राता एल. कौल को राखी बांध रही हैं।

दुर्ग में ब्र० कु० जयन्ती बहन विधायक वासुदेव चन्द्राकर जी को राखी बांधती हुई।

फिल्लौर में एस. डी. एम. भ्राता जगजीत सिंह को ब्र० कु० बहनें राखी बांधने के पश्चात्. ब्र० कु० राजकुमारी, कृष्णा तथा अन्य खड़े हैं।

बांदा में जानकी कुंड के महन्त जी को ब्र० कु० दुलारी नारियल भेंट करते हुए।

राजनाँद गाव के न्यायाधीश भ्राता डी० के० जैन को ब्र कु० शोभा राखी बाँध रही हैं।

अमृतसर में ब्र० कु० राज बहन जी डी० एस० पी० साहब को म्यूजियम में साहित्य देते हुए।

कुल्लू के डी० सी० भ्राता वी० के० भटनागर को ब्र कु० किरन जी राखी बांधते हुए।

गोराया में ब्र० कु० इन्द्रा बहन जी० एन० ए० मैनेजिंग डायरेक्टर भ्राता गुरशरन सिंह जी को राखी बांधते हुए।

तन्दुर में ब्र० कु० जगदेवी भ्राता विष्णु शर्मा (मुन्सीफ मजिस्ट्रेट) को राखी बाँध रही हैं।

सोनीपत में ब्र० कु० जनक जी भ्राता आई. एम. मलिक (सैशन जज) को राखी बांध रही हैं।

अकोला में ब्र० कु० मालती बहन कारागृह अधीक्षक भ्राता के० ईगले साहब को राखी बांधती हुई।

राजगढ़ जिला कारागार में कैदियों को राखी बांधने के पश्चात् ब्र० कु० भावना बहन जेलर सिद्दकी को राखी बांध रही हैं।

रायपुर में ब्र० कु० किरण भू० पू० मुख्यमंत्री भ्राता श्यामचरण शुक्त जी को आत्म-स्मृति का तिलक लगाती हुई।

सोलापुर में महापौर भ्राता पुरणचन्द्र जी को ब्र० कु० सोमप्रभा राखी बांध रही हैं।

मांऊट आबू से निकाली गई भारत एकता युवा यात्रा का भव्य स्वागत आकरा महा गांव के लोगों ने किया। यह चित्र उसी अवसर का है।

भारत एकता युवा पद यात्रा का केशोद शहर में पहुंचते ही भव्य स्वागत का एक दृश्य।

कलकत्ता में ब्र० कु० पुष्पा बहन भ्राता नानी भटाचार्या (पानी सिंचाई मंत्री) को राखी बांध रही है।

कश्मीरी गेट सेवा केन्द्र की ओर से भ्राता भिक्खू राम जैन को ब्र० कु० मीरा बहन राखी बांधते हुई।

दिल्ली-मालवीय नगर की ब्र० कु० बहन भ्राता देवेन्द्र सूद, सदस्य निगम को राखी बांध रही है।

धार सेवा केन्द्र की ओर से ब्र० कु० नारायणी संसद सदस्य भ्राता दिलीप सिंह को राखी बांधती हुई।

छत्तर पुर में ब्र० कु० मीनाक्षी कलेक्टर राय को राखी बांध रही हैं।

हुबली में ब्र० कु० निर्मला भ्राता डी० एन० नायक,डिप्टी कमिश्नर को राखी बांध रही हैं।

कटक सं० में ब्र० कु० कमलेश जी श्रीला जया पटाका स्वामी जी को श्री कृष्ण जी का चित्र भेंट कर रही हैं।

सहारनपुर में ब्र० कु० प्रकाश इन्द्रा जी अतिरिक्त जिला अधिकारी भ्राता नन्द किशोर आर्य जी को राखी बांधते हुए।

रक्षा-सूत्र

ले०—ब्र० कु० माधुरी राजामंडी, आगरा

दीनू बुखार से बेहोश था। उसका शरीर सूजन से सुर्ख हो रहा था। उसे स्थान, तारीख और समय का बोध नहीं था। वह इस सूचना से भी अनभिज्ञ था कि आज रक्षाबंधन के दिन ब्रह्माकुमारी बहिनें आठ बजकर तीस मिनट पर सभी कैदियों को राखी बांधने कारागार में आयेंगी। वह अचानक चौंका जब दो जेल वर्ड्स ने उसे झकझोरा—अबे तू आज ही आया दीखे। ऐसा क्यों उदास है ? अरे हमारा तो यही घर है। यहीं खाते हैं पीते हैं मौज उड़ाते हैं। तेरा भी यही घर बन जायेगा। चल तुझे परियों के दर्शन करा लायें। दूसरे ही क्षण उसने अपने को सभागार में बैठा पाया।

ठीक समय पाच हंस सदृश्य शुभ्र वस्त्रधारिणी ब्रह्माकुमारी बहिनें आईं। जेल अधिकारियों द्वारा स्वागतोपरान्त शुभ्रवस्त्रधारिणी, सुमधुर भाषिणी मुख्य बहिन की मनमोहक ज्ञान वीणा झंकृत होने लगी जिसने सबको मंत्र मुग्ध कर दिया।

"परमप्रिय परमात्मा की प्रिय संतान मीठे-मीठे भाइयो,

आज हम रक्षाबंधन का त्यौहार मना रहे हैं। क्या आप जानते हैं इसे क्यों मनाते हैं ? परमात्मा शिव ने ब्रह्मा मुख द्वारा हमें बताया है "आप देह से न्यारी सुख, शान्ति, आनन्द स्वरूप एक पवित्र अनादि अविनाशी ज्योतिर्विन्दु स्वरूप आत्मा हो। सृष्टि के आदि में जब आप आत्मायें इस सृष्टि पर आईं थीं तब आपका देव स्वरूप था। मीठे बच्चे क्या आपको पता है कि आपकी यह दुर्दशा क्यों हुई ? आपको यह दुर्दशा काम क्रोधादि विकारों, ईर्षा द्वेष वैमनस्य, निन्दा घृणा आदि बुराईयों एवं बीड़ी सिगरेट मांस मदिरा-सेवन आदि व्यसनों के कारण हुई। मेरे प्यारे बच्चों, अब आप अपने को आत्मा निश्चय कर मुझ निराकार ज्योति स्वरूप सुख, शान्ति आनन्द के सागर परमात्मा को याद करो तो आपकी सब बुराईयाँ निकल जायेंगी और आप आत्मायें पुनः देव पद प्राप्त कर सकेंगी। परमात्मा पूछते हैं कि हे मीठे बच्चों, जब आप पैदा हुये थे तो क्या आप अपने साथ ये विकार, ये बुराइयाँ, ये व्यसन लेकर आये थे। निश्चय ही जब आत्मायें कुसंग में आईं तब दूसरों से सीखा। छोटी से बड़ी बुराइयाँ आईं और वे पक्का संस्कार बनकर आपकी दुश्मन बन गईं। इन बुराइयों, व्यसनों आदि से स्वआत्मा की रक्षा करना ही सच्चा रक्षाबंधन है। हम बहिनें आपसे राखी बांधने के उपलक्ष में बुराईयों का दान लेंगी और साथ ही आपके लाभार्थ ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग प्रशिक्षण शिविर लगायेंगी।

"विकार, बुराइयाँ या व्यसन आदि आप पैदा होते समय अपने साथ नहीं लाये बल्कि कुसंग में आकर यहाँ ही सीखा है जिनसे आप महान दुख को प्राप्त हुए हो।" इस वाक्य ने दीनू के मर्मस्थल स्पर्श किया और ले गया अतीत की ओर—

एक छोटा सा चाँद सा सुन्दर घर परिवार मोहल्ले वालों का नयनों का तारा मैं आज का दुर्दान्त दीनू हूँ। पुरुस्कार विजेता नम्बर वन मेधावी छात्र था। पड़ोस के श्यामू ने ही तो मुझे बीड़ी पीना सिखाया था। क्लास के रामू ने ही सिनेमा दिखाकर पढ़ाई से वंचित किया था। पिकनिक में सब साथियों ने किस प्रकार जबरदस्ती शराब के कड़ुवे घूंट पिलाये—इस स्मृति से उसके सारे शरीर में सिरहन पैदा हो गई। पढ़ाई छोड़ी, घर छोड़ा और आज नरक-यातना। कुसंग-कुसंग-कुसंग।

ओह। यह क्या ! दीनू के चक्षुओं से अश्रुधारा प्रवाहित हो रही है। उसने रक्त से लिखकर दिया "परमपिता परमात्मा शिव को साक्षी करके प्रतिज्ञा करता हूँ कि आज से मैं बीड़ी, माँस मदिरा आदि का सेवन नहीं करूंगा। मैं आज से ब्रह्मचर्य व्रत

का पालन करूंगा। ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की क्लास नित्य किया करूंगा।" बहिनजी ने राखी बांधी और प्रतिज्ञा पत्र पढ़कर सुनाया। उसी समय जेल अधीक्षक के पास तार द्वारा परवाना आया।

"दीनू, कैदी नं० ७०८ को सभी इल्जामों से बरी किया जाता है। दीनू को तुरन्त रिहा किया जाये।

दीनू के चक्षुओं से प्रेम की अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी। और परमात्मा का लाख-लाख शुक्रिया करने लगा।

गीत

भूल न जाना ए नवयुवकों,
तुम हो ईश्वर की सन्तान।
छोड़ो ये विध्वंसक धन्धे,
इसका होता है बुरा अंजाम।
भूल न जाना.....

प्रीत तुम्हें भेजा है इस पद्य में,
प्रीत नहीं मेरा दर्द है।
बन जाओ हमदर्द जहाँ के,
यही तुम्हारे काबिल है।
भूल न जाना.....

भू पर तुम्हें भेजा है ईश्वर ने,
भू-पुत्र नहीं तुम तिल हो।
तिल से परबत बन जाते हो,
जब अत्याचार बढ़ता हो।
भूल न जाना.....

इस धरा पर आये थे जब,
फूल से कोमल थे तुम तन।
मन बुद्धि हुई विकसित,
तब तुमने पाया यौवन।
भूल न जाना.....

यौवन के चतुष्कोण पर,
समान्तर रेखा हो तुम।
शांति औ अशांति की,
परिभाषा बन जाते तुम।
भूल न जाना.....

युवावस्था के तुम धनी हो,
पवित्रता से बढ़कर न कोई गुण।
जहां चाहो झोंक दो इसको,
ऐसी निराली है ये उम्र।
भूल न जाना.....

मानवता के लिए जिओ तुम,
और इसी हित करो जतन।
श्रमेव् जयते के नारे को,
आज कर दो बुलंद तुम।
भूल न जाना.....

खून खून का एक है रंग,
फिर क्यूं काला गोरा तन।
सबके मन से दूर हो ये भ्रम,
भेद न इसमें करे कोई वतन।
भूल न जाना.....

यौवन में वो युक्ति है जो,
नर से नारायण बन जाओ तुम।
ब्रह्मचर्य की धारणा करके,
अहंकार किनारा कर दो तुम।
भूल न जाना.....

तुम गौरव हो हर युग के,
आशा हर आंगन की तुम।
तुम हो साध्य, तुम्हीं साधन,
नाश करो जांत-पांत, रंग की गंध।
भूल न जाना.....

[ब्र. कु. रामकुँवर सिंह]

आध्यात्मिक सेवा समाचार

30 अगस्त को रक्षा बन्धन का त्यौहार हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी बहुत ही उमंग-उत्साह से मनाया गया। भारत के कोने-कोने से तथा विदेशों के सेवा केन्द्रों से उमंग-उत्साह भरे ईश्वरीय सेवा के समाचार प्राप्त हुए हैं। भारत की राजधानी दिल्ली में राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैल सिंह जी, उपराष्ट्रपति भ्राता वेंकटरमन जी, अनेक केन्द्रीय मन्त्रियों, संसद-सदस्यों, उपराज्यपाल, मैट्रोपोलिटन के मैम्बरों, नगर निगम के सदस्यों को राखी बांधी गई। उच्चतम न्यायलय के मुख्य न्यायाधीश तथा अन्य न्यायाधीशों, पुलिस अधिकारियों, पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों, धार्मिक नेताओं तथा अन्य अनेक महानुभावों को पवित्रता की सूचक राखी बांधकर आत्म-स्मृति का तिलक लगाया गया।

भारत के विभिन्न राज्यों को राजधानियों से तथा अन्य महानगरों के सेवाकेन्द्रों से भी समाचार मिले हैं कि वहां के राज्यपालों, मुख्यमन्त्रियों, मन्त्रीगण, अधिकारीगण को भी राखी का पावन सन्देश दिया गया। यह भी समाचार मिला है कि राखी का शुभ सन्देश कैदियों, अन्ध-विद्यालयों एवं मूक विद्यालयों के विद्यार्थियों को भी दिया गया। इस प्रकार राखी का पवित्र सन्देश जन-जन तक पहुंचाया गया। इसके अलावा जन्माष्टमी पर भी सर्व केन्द्रों पर श्री कृष्ण तथा स्वर्ग की झांकियां सजाई गईं जिन्हें देखने को भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी। ऐसे समाचार भी प्राप्त हुए हैं।

भारत के कोने-कोने से गुजरती हुई 'भारत एकता युवा पद यात्रा' द्वारा हो रही ईश्वरीय सेवाओं, तथा राखी और जन्माष्टमी के त्यौहारों पर हुई सेवाओं से सम्बन्धित फोटो तथा समाचार हमें इतने तो प्राप्त हुए हैं जिनको अगर पूरे वर्षभर ज्ञानामृत में छापा जाए तो भी आपर्याप्त होगा।

सीरसी में ब्र० कु० गायत्री बहन भ्राता उमेश सेठी जज साहब को राखी बांध रही है बैठे हुए भ्राता प्रहलाद चार्या सिविल जज तथा मजिस्ट्रेट साहब व अन्य गणमान्य व्यक्ति दिखाई दे रहे हैं।

एयर वाइस मार्शल एस. के. वर्मा को राखी बांधने के पश्चात् पालम दिल्ली सेवा केन्द्र के भाई बहन उनके साथ दिखाई दे रहे हैं।

दुर्ग जिला जेल में कैदी भाइयों को राखी बांधती हुई ब्र० कु० जयन्ती व ब्र० कु० उषा बहन।

दिल्ली में कार्यक्रम पृष्ट....१..... का शेष

3. समस्याओं को सुलझाने के लिए हिंसात्मक तरीकों का त्याग

4. हरेक को स्नेह-युक्त आत्मिक दृष्टि से देखना और राष्ट्रीय एकता तथा अन्तर्राजीय शुभ भावना पैदा करना

5. अश्लील फिल्मों और साहित्य का परित्याग करना

6. आत्म-नियन्त्रण से जनसंख्या-नियन्त्रण में सहयोग देना

7. नारी जाति का सम्मान करना तथा अन्य सामाजिक कुरीतियों, जैसे कि बाल-विवाह और दहेज-प्रथा का बहिष्कार करना

विभिन्न गांवों में इन पदयात्रियों को बहुत अच्छा सहयोग मिला। इनका हार्दिक स्वागत किया गया। बहुतों ने उपरोक्त बुराइयों को छोड़ने तथा नैतिक व मानवी मूल्यों को जीवन में अपनाने की प्रतिज्ञा की। बहुत से स्थानों पर नैतिक व आध्यात्मिक नियमों की शिक्षा के लिए केन्द्र खोलने तथा ईश्वरीय ज्ञान व सहज राजयोग का अभ्यास कराने के लिए पदयात्रियों को निमन्त्रण मिले।

प्रसार-साधनों का सहयोग (Media Coverage)

रेडियो, दूरदर्शन आदि ने इस कार्य का प्रसार करने में सहयोग दिया तथा इसकी सराहना की। बहुत-से समाचार पत्रों ने इसका समाचार अपने-अपने पत्रों व पत्रिकाओं में काफी विस्तृत रूप से प्रकाशित किया।

नेतागण, पब्लिक तथा अन्य संस्थाओं का सहयोग

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय, माउण्ट आबू में इस जन-सेवा का प्रारम्भ भारत के राष्ट्रपति, ज्ञानी जैल सिंह द्वारा हुआ और लगभग हर प्रदेश, जैसे राजस्थान, गुजरात, बंगाल, उड़ीसा आदि में पदयात्रा का रवानगी समारोह (Flag-off Ceremony) वहां के गवर्नर या अन्य किसी प्रसिद्ध नेता द्वारा किया गया। कई धार्मिक तथा शैक्षणिक संस्थाओं, युवा संगठनों, सामाजिक संस्थाओं तथा नगरपालिकाओं या जिला प्रशासन संस्थाओं ने पदयात्रियों का हार्दिक स्वागत किया तथा उन्हें अन्य सब प्रकार का सहयोग दिया। उदाहरण के तौर पर, अहमदाबाद की म्युनिसिपल कार्पोरेशन ने यात्रियों का अपनी ओर से भव्य स्वागत किया और अन्य कई स्थानों पर रोटरी क्लब, लायन्स क्लब तथा अन्य संस्थाओं ने उनका हार्दिक स्वागत किया। ग्रामवासियों पर तो बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा और एक रात ठहरने के बाद, पदयात्रियों को विदाई देते समय उनकी आंखें प्रेम से सजल हो उठतीं।

दिल्ली में कार्यक्रम

इन सभी, लगभग 600 पदयात्रियों का, 24-अक्तूबर को नई दिल्ली स्थित तालकटोरा स्टेडियम में स्वागत किया जाएगा और देहली के उपराज्यपाल महोदय इनकी शोभा यात्रा घोषित करेंगे।

24 अक्तूबर को नई दिल्ली व दिल्ली के मुख्य स्थानों से एक विशाल शान्ति यात्रा निकाली जाएगी।

25 अक्तूबर को दिल्ली की संस्थाएं इन पदयात्रियों का स्वागत दिल्ली में करेंगी।

ब्र० कु० सुमित्रा हरदोई के जेलर, भ्राता शिवचरन सिंह को राखी बांधते हुए।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd. No 10563/65-D, (E)—70